सन्तों की होली

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश मार्च, 1963 में प्रकाशित प्रवचन)

दुनिया में हमेशा एक दौर चलता रहता है। वह क्या, सच और झूठ की हमेशा लड़ाई होती है। सच को दबाने के लिये झूठ बड़ी कोशिश करता है कि वह किसी न किसी तरह से दर पर्दा हो जाये। मगर सच एक ऐसी चीज है, कभी दर पर्दा न हुई, न हो सकती है, आखिर निकल जाती है। तो यत्न इस बात का होना चाहिये कि सच क्या है, उसको जानो। किसी के कहने पर, सुने-सुनाये पर नहीं बल्कि अपनी आँखों से देखो, अपने कानों से सुनो।

प्रहलाद थे उनका पिता हरण्याकश था। हरण्याकश चाहता था कि मैं ही परमात्मा हूं, मुझे सब पूजो। जो गर्जमन्द लोग थे ना, जो असूल से गिरे हुये लोग थे, उन्होंने मान लिया यह खुदा है। सब को पेट की पूजा चाहिये, गर्जों की पूर्ति चाहिये। बस। मगर जो असूल परस्त थे, प्रहलाद, उसने देखा, भई राम मेरा सब में है। उसी का यह भी बनाया हुआ है। यह कहता है उसको छोड़ो, मुझे पूजो। उसने इस बात की परवाह नहीं की। सच का पुजारी था। कितनी भी उस पर सख्तियाँ की गई, मगर उसने परवाह नहीं की। उसका कारण, कि वह प्रभु का पुजारी था। दुनिया का पुजारी नहीं था, गर्जों का पुजारी नहीं था। अपनी खास-खास नफ्सायित (भोगों) को पूरा करने के लिये सच को दर पर्दा नहीं करना चाहता था। आपको इतिहास बतलाता है कितनी-कितनी तकलीफें उसको दी गई। एक वाकिया उनके जीवन में यही है जो कल आप पर भी था, वह क्या ? होली ! होली किसकी याद में है ? सच और झूठ की लड़ाई है और सच की फतेह (विजय) का जिक्र है। प्रहलाद का पिता यह चाहता था कि यह मुझे पूजे। वह कहता है, नहीं, मैं तो राम का पुजारी हूं। वह परमात्मा जर्रे-जर्रे में है। कई तरीकों से उसने उसको दुःख दिया, मगर उसने एक नहीं सुनी। वह देखता है, कि सारी दुनिया भी अगर मुखालिफ हो और एक पूर्ण पुरुष, परमात्मा जिस पोल पर बैठा है, वह उस की तरफ हो, उसको क्या डर है।

जे गुरु होय वल्लतां लख बाहें क्या करीजे ।।

वह साथ हो। और वह देखता है कि उसका आधार है। बच्चा देखता है कि मेरी माता मेरे साथ है। हजार लोग डराये, उसको यह कहें, वह कहें, मगर वह शेर है। वह शेर है, अपने

आप पर नहीं, अपनी माता के आधार पर। इसी तरह जो अनुभवी पुरुष है, वह देखता है मेरा मालिक मेरे सिर पर है। मेरे सिर पर ही नहीं, मुझे Direct कर रहा है। उसके आधार पर वह जी रहा है। सारी दुनिया उसको मारने के लिए आये तो भी बेपरवाह है। और फिर माता उसको मारने कैसे देती है ? तो यह वाकिया है कि आखिर यह सोचा कि किसी तरह से प्रहलाद बाज नहीं आता तो उन्होंने उनकी बहिन थी या क्या थी, उसका नाम था होलिका। होलिका को यह वर था कि अगर वह आग में बैठे तो वह जल नहीं सकती थी। यह वर था। आखिर उसने सोचा कि भई बच्चे को यह गोद में लेकर आग में बिठा दूंगा, यह बच्चा जल जायेगा, यह बच जायेगी। चुनांचे ऐसा ही किया गया। बड़ी भारी Conflagration (चिता) की, बहुत सारी लकड़ियों का ढेर लगा कर उसमें आग लगा दी और प्रहलाद को होलिका गोद में लेकर बीच में बैठ गई।

नतीजा क्या हुआ ? रात को लोगों ने बड़ी खुशियां की, शुक्र है, बला दफा हुई। जो हरण्याकश के पुजारी थे ना, उन सबने बड़े गाने-बजाने, नाच रंग किये, वाह वाह, शुक्र है,खात्मा हुआ प्रहलाद का। जब दिन चढ़ा, देखा तो प्रहलाद बचा हुआ था, होलिका जल गई थी। फिर खैह उड़ाने लगे, मुंह काले करने लगे, हाय हाय करने लगे। तो उसकी याद में यह होली का दिन है, यह इसका महातम है आपके सामने, कि आखिर सच की जय है और झूठ की खैह है। तो आप सब, जो भाई बैठे हो, आप सच के पुजारी हो कि झूठ के ? जबान से आप कुछ भी कहो, दिल तो कहेगा भई सच ही कहेंगे। समझे ! हम सब सच के पुजारी हैं। सत्संग में आये हो, सत को तलाश करने के लिये। झूठ के पुजारी नहीं। तो यह याद रखो, जो सच है वह कभी छुप नहीं सकता। समझे ! हजार बादलों में भी वह अपनी चमक दे जाता है। सिर्फ देखने वालों की जरूरत है। आँख हो तो । एक बात याद रखो, जो सन्त मत का असूल है ना, उससे गुमराह न हो (उससे परे न हटो) वह क्या है ?

जब लग न देखूँ अपनी नैनी,
तब लग न पतीजूँ गुरु की बैनी ।

किसी के कहे पर एतबार नहीं करो, सुनोगे तो बहक जाओगे। दूसरे की आँखों से देखोगे तो किसी जगह के नहीं रहोगे। बोलोगे तो मारे जाओगे। समझे । जबान को काबू रखो। कुछ निकालो नहीं जबान से, जब तक तुम्हारा अपना तजरुबा न हो। ज्यादातर दुनिया क्या है ? एक इन्सान कहता है। वह दूसरे को कहता है। वह तीसरे को कहता है। वह चौथे को कहता है। पहिले थी राई। राई का बना दाना, दाने का तरबूज, तरबूज का पहाड़ बन गया। तो सुनी-सुनाई बात पर कभी मत जाओ। हमारे हजूर थे। अकाली भाई यह फ़र्माया करते थे कि इनकी आँखों में न देखो, यह जादू कर देते हैं। समझे ! आज आपको पता है, दुनिया क्या कहती है? कि इनको देखो ही नहीं, काल आ जायेगा। भई काल तो है।

काल हूं के काल, महाकालहू के काल हो।

वह तो काल का भी काल है भई। काल की जो दुविधा है, आओगे, सामने बैठोगे, सुनोगे। बात बड़ी साफ है। साफगोई, साफ दिली से बयान किया गया है। उसमें तो कोई दुविधा है नहीं ना ! दिल मान जाता है। इसलिये जो आते हैं, वह जाते नहीं। जो सुनी-सुनाई पर नाच रहे हैं, वह रोते हैं।

मुझे जालन्धर जाने का इत्तेफाक हुआ। वहां बहुत सारे भाई इकट्ठे हो गये। पांच, सात सौ, हजार के करीब। सतसंग हुआ। सतसंग में हजूर की याद बनी तो चार आदमी सतसंग खतम होने पर बेअख्त्यार उठ खड़े हुये। कहने लगे, "महाराज ! हम तो आपको देखने से डरते थे।" मैंने कहा, "क्यों ?" कहते हैं, "यह काल का रूप है।" मैंने कहा, "भई, आपको पाँच नाम मिले हैं, उच्चारण करो। काल होगा तो भाग जायेगा"। तो हमेशा याद रखो, सच के पुजारी बनो। इसमें किसी को रौ-रियायत नहीं। सच वह है जो सामने आये। A tree is know by the fruit it bears. पेड़ की कीमत उसके फल से है। अगर उसमें फल नहीं है, हजार प्रापेगन्डा करो, फल नहीं पड़ेगा। तो आज का दिन, कल का दिन, जो आपने देखा था, होली का, वह इसी बात का निर्णय था कि सच की हमेशा जय है। उसको अपनी आँखों से जब तक न देखो, ला-गर्ज होकर गर्ज की पट्टियां खोलकर तब तक वह सच, सच नजर नहीं आता। नहीं तो देखने में भी फर्क पड़ता है। जैसी ऐनक चढ़ाओगे, वैसा नजर आयेगा। Presupposed idea (पहले से धारणा बनाकर) मत आओ। देखो, क्या है ? हकीकत साफ होगी, दिल खिंचेगा। क्योंकि सच है ना, सच खैंचता ही है। वहां रौ-रियायत किसी की नहीं है। तो होली का दिन आज, कल कई भाईयों पर रंग भी पड़े हैं। कई के मुंह काले भी हुये होंगे। तो याद रखो होली का त्योहार मनाना, प्रहलाद की सेना को जो मिट्टी की खेह उड़ाते है ना, वह इसीलिये उड़ाते हैं कि होलिका मर गई। चलो ! हाय हाय करते हैं, जो झूठ के पुजारी हैं। जो सच के पुजारी हैं, सिख भाईयों में, आपको पता है, होला निकालते हैं, खुशी करते हैं कि सच की जय हो गई है। भई होला तो मनाओ, समझे, होली मत मनाओ।

यह तो हुआ बाहर का। अब सन्तों की नजर से होली क्या है ? वह देखते हैं, कि सारी दुनिया ही होली खेल रही है। समझे ! तो मैं अर्ज कर रहा था कि सन्तों की नजर में यह होली क्या है ? कहते हैं कि सारी दुनिया ही होली खेल रही है। मगर जो होली यह खेल रहे हैं, वह कैसी होली है, जिसमें जीव जब से प्रभु से बिछड़ा है तब से घर नहीं जा सका। तो वह दोनों बातों को सामने रखकर पेश करते हैं कि कैसी होली दुनिया खेल रही है और कैसी होली खेलने से जन्म-मरण खत्म होता है। उसका ज़िक्र होगा। तो आज आपके सामने एक दो

महापुरुषों की वाणी रखी जायेगी। एक तो स्वामीजी महाराज की वाणी जिसमें इस बात का बड़ी खूबसूरती से निर्णय किया है। दूसरे मीराबाई की या किसी और महापुरुष की वाणी। तो हम तो भई सच के पुजारी हैं। कहीं से सच लो, गौर से सुनिये। पहिले एक शब्द पढ़ा जायेगा, फिर उसके बाद स्वामीजी महाराज की वाणी और फिर किसी की ।

बिगड़ी को अब भी बना ले, क्यों मूरख सुख में सोया ।
अब तक सोया उम्र बिताई, भंग के भाड़े पूंजी गंवाई,
क्या लेवे तू अब अंगड़ाई, कुछ गुण प्रीतम के गाले,
अब तक मुंह नहीं धोया, क्यों मूरख सुख में सोया।
क्या फिरता तू इधर उधर है, खोई मूढ़ असली डगर है,
अब तक आया नहीं सबर है, क्यों घर-घर झाड़े जाले,
पा रतन है मूरख खोया, क्यों मूरख सुख में सोया ।
अब भी तू कुछ सोच समझकर, बीती हुई पर एक नजर कर
मोती चुनले छोड़दे कंकड़, क्यों बृथा देखे भाले,
प्रीतम है मन में सोया, क्यों मूरख मन में सोया ।
मालिक तेरा है घट अन्दर, चाहे तू फिर ले मन्दिर मन्दिर
काशी मथुरा का बनकर बन्दर, तू उसको देख दिखा ले,
काटेगा वही जो बोया, क्यों मूरख जग में सोया ।
जब तक घट में तू नहीं ध्यावे, तब तक बृथा टक्कर खावे,
सत्गुरु को तू कभी न पावे, विशयन की तू नस को दबा ले ,
इसने है बेड़ा डुबोया, क्यों मूरख सुख में सोया ।
सत्गुरु को कभी न पावे, विशयन की तू नस को दबा ले।
इसने बेड़ा डुबोया, क्यों मूरख सुख में सोया ।

अब इस वक्त स्वामीजी महाराज का शब्द है। गौर से सुनिये वह क्या फर्माते हैं । जो अनुभवी पुरुष हैं वह सब एक हैं। They are the children of light. वह नूर के बच्चे होते हैं, जब आते हैं सब दुनिया को रोशनी दे जाते हैं। वह सामाजिक गुरु नहीं हैं, वह जगत गुरु हैं। अगर कोई भाई उनको किसी खास रंग में रंगना चाहता है, या कहता है तो यह तंग नजरी है। वह सब मनुष्य जाति के लिए होते हैं, सब का उद्धार करने के लिए As a man problem वह पेश करते हैं। वह सत के पुजारी होते हैं, उनको गर्ज होलियों से है, न त्यौहारों से है, न एक बात से है न दूसरी से है, न किसी को बनाते हैं, न तोड़ते हैं। हकीकत की राह दिखाते हैं, आँख वह खोलते हैं, जिससे वह हकीकत का देखने वाला हो जाता है।

वह सब को सब बन्धनों से आज़ाद करने आते हैं, बन्धन में डालने नहीं आते। जैसे इन्शोरन्स एजेन्ट हो ना, वह जब आता है, बड़ी मीठी-मीठी बातें करता है। उसी नजरिया से करता है जिसमें लोग बरत रहे हैं। कोई बिजनिस व्यौहारी हो, देखो तुम्हारे पास रुपया हो जायेगा। जो बाल बच्चेदार हो, 'देखो भाई बाल बच्चों के लिए कर लो, रुपया मिल जायेगा। शादी होनी है, रुपया इकट्ठा हो जायेगा। फिर कहते हैं, इन्शोरन्स करा लो। तो इसी तरह सन्त महात्मा तरीके तरीके से अपने मिशन का प्रचार करते हैं। गौर से सुनिये कि उनका अपना मिशन क्या है। पहिले उसका सिद्धान्त पेश करेंगे, फिर उसके बाद, खोल खोल समझायेंगे कि दुनिया कैसे होली खेल रही है, और कैसी होली खेलने से तुम प्रभु को पा सकते हो। उनका मिशन तो बिछुड़ी हुई रूहों को प्रभु से मिलाना है ना। बड़े गौर से सुनिये वह क्या फ़र्माते हैं ।

फागुन मास नवाँ, उतरना सुरत का बीच में नौ द्वारों के, और फंस जाना मन और इन्द्रियों का संग करके भोगों में, और फिर लाना सतपुरुष दयाल का तन स्वरूप धर कर, और पहुंचाना सुरत को निज घर में, शब्द मार्ग की कमाई से। और वर्णन भेद रास्ते और मुकामात का।

याने इस शब्द का सिद्धांत यही है, कैसे रूह, मन इन्द्रियों के घाट पर जकड़ी गई। अपने आपको भूल गई, प्रभु को भूल गई बाहर की रंग-रलियाँ माण माण कर, होली खेल खेलकर। इस हालत में जीवों को देख कर, दुखी, उस मालिक के दिल में दया की लहर उठती है। वह किसी पोल (मानव देह) पर इज़हार करके, प्रगट होकर दुनिया को इससे निकालने आता है। बस। किस तरीके से निकालते हैं ? सुरत -शब्द मार्ग से, जो सहज मार्ग है, सबके लिए, बच्चा, बूढ़ा, जवान, सब कोई कर सकता है। तो यह मिशन उनका है, जो हमेशा होता है। उसको पेश करते रहते हैं। और होली के त्यौहार को सामने रखकर आपको पेश करेंगे कि दुनिया कैसी होली खेल रही है और कैसी होली खेलनी चाहिये ।

फागुन मास रंगीला आया,
धूमधाम जग में फैलाया ।

अब फागुन के महीने के द्वारा, फागुन में आपको पता है ना, फूल खिल आते हैं। बड़ी रंग बिरंग की बहार होती है, बड़ा जी करता है बाहर फैलने को। घर बैठने को जी नहीं करता है। शेख शादी साहब कहते हैं कि भई अब बैठने की बहार नहीं, बाहर चलो मरगजार में, वहां कुदरत अपना इज़हार कर रही है। उसके नशे को लो, अब कोने में बैठने की ज़रूरत नहीं है। तो यह शायराना तरीका है। कहने का मतलब क्या है, कि अब बाहर फैलाव में जा रही है ना इन्द्रियां, रंग बिरंग के नशे ले रही हैं। एक-एक इन्द्री के आधार पर इन्सान कितना नाच उठता

है, देखता है, नशे में जाता है। आँखे ऊपर चढ़ जाती है तो नीचे पांव अठखेलियां करते हैं। अहंकार में आया हुआ, उसकी आँखें और भी टेढ़ी हो जाती है। ज़मीन पर चल नहीं सकता है। तो हर एक इन्द्री के आधीन हुआ इन्सान कितना फैलाव में, अपनी तरफ से बड़े रंग में, नशे में जाता है।

कहते हैं, यह जिन्दगी जो मिली है ना, यह एक फागुन मास है। हमारी आत्मा मन के आधीन होकर इन्द्रियों के घाट पर फैलाव में जा रही है। बड़े नशों में जा रही है। इस नशे का हश्र (परिणाम) क्या होगा ? फैलाव में जो सुरत फैल रही है, बाहर नशे, बाहर रागों-रंगों में, यह वह में, मस्त हो रही है। आखिर कहां जायेगी ? जहां आसा तहां बासा। तो कहते हैं, यह फागुन मास हमारी जिन्दगी का महीना है। हम फैलाव में जा रहे हैं, बड़े राग-रंगों में लोग मस्त हो रहे हैं। कहीं बाहर जंगलों की बहार है, कही राग-रंग खेल रहे हैं, कहीं कुछ नाच कूद हो रहे हैं, कई तरह की रंग-रलियां मना रहे हैं दुनिया के लोग। यह एक ऐसी होली है जो सारा जहान खेल रहा है। यहां कौमों, मजहबों, मुल्कों का सवाल नहीं, यहां आत्मा देहधारियों का सवाल है, जिनकी आत्मा मन-इन्द्रियों के घाट पर बाहर भोगों-रसों और नशे में जा रही है। कहते हैं यह होली है जो हर एक इन्सान खेल रहा है ।

घर घर बाजे गाजे लाया, झांझ मंजीरा दफ्फ बजाया ।

बाहर लोग होली खेलते हैं ना ! नाचते हैं, कूदते हैं, यह करते हैं, वह करते हैं। कहते हैं, घरों- घरों में, यही हो रहा है। बच्चों में बैठा मस्त है। दुनिया का रूप बना बैठा है। प्रभु को भूल रहा है। कहीं खुशियां हो रही है, कहीं मातम हो रहे हैं, हला-हल, कहीं खेह उड़ा रहे हैं, कहीं मिट्टी सिर पर डाल रहे हैं। कहीं नशों में पाव ज़मीन पर टिकते नहीं हैं। कहते हैं, घरों-घरों में ऐसी होली खेली जा रही है। सब इन्द्रियों के भोगों- रसों में मस्त हो रहे हैं, इस नशे में चूर हो रहे हैं। घर-घर तबले और सारंगियां बजा रहे हैं, तराने गाये जा रहे हैं, सुसायटीज़ हो रही हैं, शाम को मीटिंग्स हो रही हैं। वहां वाह वाह, वाह वाह हो रही है। और इसी में दुनिया मस्त है। यह होली है जो सब खेल रहे हैं। सन्तों की नज़र से कह रहे हैं कि जीव क्या कर रहे हैं !

यह नर देही फागुन मास, सुरत सखी आई करन विलास ।

यह बाहर का हाल बयान करके, जैसे लोग होलियां बाहर खेल रहे हैं ना, रंग तमाशे, नाच रंग, हला हल कर रहे हैं, कहते हैं, इसी तरह यह मनुष्य देही हमको मिली है, हमारी सुरत भी ऐसी ही होली खेल रही है। इन्द्रियों के भोगों-रसों में लम्पट हो रही है, नाच नचा रही है। यह मन जो है ना, हाथी बना कर इस शरीर रूपी कुटिया में इसको नाच नचा रहा है, इन्द्रियों के

भोगों रसों में। काम आया तो देखो उसकी शकल क्या बन जाती है। क्रोध आया तो उसकी सुरत क्या बन जाती है। मोह आया तो उसी का कुछ और रंग बन जाता है। अहंकार आया तो उसकी आँख कुछ और ही नज़र आती है। कहते हैं, यह मनुष्य देही मिली है, हमारी आत्मा, जो सुरत है,मन और इन्द्रियों के घाट पर यह अजीब होली खेल रही है। अपने आप की होश नहीं है। जो नाचते होते हैं वह अपना मुंह भी काला करते हैं, दूसरों का भी करते हैं। आप भी रंगे जाते हैं, दूसरों को रंग कर खुश होते हैं। जिस रंग में आप रंगा है ना, कोई कामी है, तो लोगों को काम के नशे में फंसा रहा है। क्रोधी है, ईर्षा है, हां भई अपना हक हासिल करो, लड़ मरो, असूल के मारे, असूल जिन्दगी का बना रखा है हमने नया। सच्चा असूल नहीं है। सच का असूल तो मिला कर बैठना है। एक ही के हम पुजारी हैं। सब उसी के बच्चे हैं। सब एक ही जायदाद के मालिक हैं। बाँट कर खाओ। इसके पुजारी नहीं रहे। कहते हैं, यह हालत है ! मनुष्य देही हमको मिली है। हमारी आत्मा, सुरत जो है, इन्द्रियों के भोगों-रसों में होली खेल रही है।

मन इन्द्री संग खेली फाग उत से सोई इत को जाग ।

कहते हैं, मन के साथ सुरत लग गई, मन इन्द्रियों के साथ लगा, भोगों- रसों में यह फाग खेल रही है। होली खेल रही है। कहते हैं, क्या नतीजा हुआ ? उधर से सो गई, इधर को जाग उठी। वैसे आत्मा याद रखो, परमात्मा से कभी जुदा नहीं है, न हुई है, न हो सकती है।

एका सेज बिछी धन कन्ता, धन सूती पिर सद जागन्ता ।

एक ही सेज पर, आत्मा और परमात्मा दोनों ही विराजमान हैं। एक ही बिछी हुई सेज है। मगर हमारी सुरत मन इन्द्रियों के घाट पर बाहर फैलाव में जा रही है, बाहर रंग-रलियां माण रही है। अन्तर से सो रही है। अगर यह बाहर रंग-रलियों से हटे, अन्तर्मुख हो, तो इसका पिया हमेशा इसके संग, साथ है, न कभी इससे जुदा हुआ, न हो सकता है। कहते हैं, इस होली खेलने का नतीजा क्या हुआ सुरत को ? इन्द्रियों के भोगों रसों में लम्पट हो कर फैलाव में जाते हुये हकीकत की तरफ से सो गया, दुनिया में जाग उठा। जन्मों-जन्मों से, जब से सुरत हमारी दुनिया में आई, कब आई, इसका कोई हिसाब नहीं। चार अरब कुछ साल आर्य सम्मत है। वह भी इस प्रलय के बाद का है ना ! पहले कितनी प्रलय, कितनी महाप्रलय हुई। जब से सुरत हमारी उससे जुदा हुई, यह इन्द्रियों के भोगों रसों की रंग-रलियां माणती रही, होली खेलती रही। उस तरफ से सोई रही, यहां जाग उठी। नतीजा ?

जहां आसा तहां बासा ।

बार-बार दुनिया में आती रही। आप देखिये सन्तों का नज़रिया, कितनी खुश-बयानी से बयान कर रहे हैं। हकीकत को खोलकर पेश कर रहे हैं, अरे भई तुम क्या होली खेल रहे हो ?

लिया बाहर का त्योहार, समझा रहे हैं, अरे भई तुम भी होली हर रोज खेल रहे हो। इस होली से हटो। सच के पुजारी बनो। अपनी सुरत जो बाहर फैलाव में जाकर रंग-रलियां माण रही है, इस तरफ से हटो। Be desireless (इच्छाओं को त्यागो) बुद्ध भगवान कहते हैं। सारे महापुरुष यही कहते हैं। जितने तुम इन्द्रियों के फैलाव से हटोगे उतनी ही हकीकत की तरफ, नजदीक आओगे। जितना फैलाव में जाओगे, हकीकत से दूर हो जाओगे, दुनियादार बन जाओगे। यह है असलियत। जिस भूल में दुनिया जा रही है उससे जीवों को निकालने के लिये सन्त आते हैं ।

मन इन्द्री संग खेली फाग, उत से सोई इत को जाग ।

जब जब महात्मा आये ना, वह यही पुकारते रहे, अरे भाई जागो ! यही वेद भगवान कहता है Awake ! arise ! and stop not till the goal is reached. जागो ! हम यहीं इन्द्रियों के भोगों-रसों में सो रहे हैं। यहां जाग रहे हैं, वहां सो रहे हैं। कहते हैं, उधर से, उस तरफ से जागो ! यही कबीर साहब फर्माते हैं -

जाग प्यारी अब काहे सोवे,
रैन गई दिन काहे को खोवे ।

मनुष्य जीवन का दिन चढ़ा है। यह वक्त है तेरे जागने का, इन्द्रियों के घाट से हट कर हकीकत की तरफ मुंह करने का। अरे भई अब तो मनुष्य जीवन मिला है, अब क्यों सो रही है। सब महापुरुष यही कहते हैं । गुरु अर्जुन साहब ने फर्माया -

उठ जाग वटावड़िया तैं क्या चिर लाया ।

ऐ रस्ते के मुसाफिर ! उठ जाग ! तू क्यों देर कर रहा है। मनुष्य जीवन हाथों से जा रहा है। हर दिन, हर घंटा, हर घड़ी, तुम्हें उस आखिरी तबदीली (परिवर्तन) के, जिसको मौत कहते हैं, उसके नजदीक ला रही है, तू अब भी सो रहा है। कब जागेगा ! कितनी हमदर्दी के लफ्ज हैं ! सन्तों के अन्तर, जो पूर्ण पुरुष हैं, उनमें प्रभु बोलता है। वह (प्रभु) कहां मिलता है ? जंगलों, बियाबानों में, तीर्थों-तटों पर, ग्रन्थों-पोथियों में नहीं, वह साधु की ज़बान पर बोलता है। समझे ! वह यह कहते हैं, अरे भई तुम सो क्यों रहे हो ? जागो ! जन्मों-जन्मों से अन्तर से सो रहे हो। यह वक्त है, यह होली बाहर खेलने का क्या मजा तुमको मिला ? प्रभु से बिछुड़े, अब तक घर नहीं गये ।

जग में आ संजोग मिलाया लोक लाज कुल चाल चलाया ।

कि जगत क्या, एक खेल है। संयोगों का काम है, लेने देने का सामान है। जब खत्म होता है, सब कोई चला जाता है।

कहाँ सो भाई मीत है, देख नैन पसार ।।
एक चाले एक चालसी सबको अपनी बार ।।

न कोई भाई है, न कोई बन्धु, न माता न पिता, न स्त्री न पति, न बच्चा न पिता, सब लेने देने के सामान हैं। सो रहे हैं। इसमें जो जाग उठा, हकीकत को पा गया। वहां कहां के बन्धु, कहां के रिश्तेदार रह जाते हैं ? वह देखते हैं, सब आत्मा देहधारी हैं। आत्मा प्रभु की अंश है। लेने देने के सामानों के सबब यहां पर यह रिश्ते बन गये। उसको निभाओ। मगर हकीकत की नज़र से तो सब लेने देने का सामान है ना ! कहते हैं, यह संयोग के असूल से, यह सारा काम चल रहा है। कोई भाई है, कोई बन्धु है। अरे भई सब आत्मा देहधारी हैं। सब में प्रभु है। सबसे प्यार करो। अगर Attached हो गये, तुम बन्धन में आ गये। स्त्री के बन्धन में आये ख्वाहे बच्चे के बंधन में आये, या किसी में, फिर कहां जाओगे ? जहां वह जायेगा। अगर तुम हकीकत परस्त हो, मर कर कहां जाओगे ? हकीकत की तरफ ! समझे ! क्या नज़रिया वह देते हैं, हमारा नज़रिया क्या है ? जो अनुभवी पुरुष हैं ना, वह तो इस हालत में से जाग उठते हैं ।

बैठे खड़े उताने, कहें कबीर हम वही ठिकाने ।

दुनिया अपनी ऐनकों से देखती है। उसमें रंगती है। अपने Comments (व्याख्या) देती है। हकीकत से वह भी दूर हो जाते हैं। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि यह संयोग का सिलसिला है। यही गुरु नानक साहब ने जपजी साहब में बतलाया -

संजोग बियोग दोये कार चलावें लेखे आवे भाग ।।

संजोग और वियोग दोनों असूल है। संजोग के जरिये मिलता है। वियोग के जरिये खत्म होता है, जाता है। यह दो असूल सारी दुनिया को चला रहे हैं। जो लेना देना है, उसके मुताबिक भाग्य बन रहे हैं। दुनियां का सिलसिला इसी तरीके से चल रहा है। यही स्वामीजी महाराज फर्मा रहे हैं। सौ सयाने एक ही मत। उनका नज़रिया यह है देखने का दुनिया को। घर को भी। वहां मैं तू का सवाल नहीं है भई। अपने पराये का सवाल नहीं है, वहां तो आत्मा की नज़र से देखा जाता है । उनको कभी भूल कर भी यह नहीं आता कि यह मेरा रिश्तेदार है।

जग में आ संजोग मिलाया,
लोक लाज कुल चाल चलाया ।।

दुनिया की चाल इसी तरह से चल रही है। कोई यहां उतरा स्टेशन पर, कोई अगले स्टेशन पर उतरा। कोई चढ़ बैठे, कोई उतर गये। रात का समय हुआ, दरख्त के नीचे कई पंक्षी आ

बैठे। दिन चढ़ा, सब अपनी अपनी राह चल पड़े। कौन किसी का मीत, एक ही मित्र है, वह असूल कहो, प्रभु कहो, परमात्मा कहो, जो असूल गुरु में प्रगट है, वह कहो।

भोग रोग परिवार बंधानी,
फगुआ खेली होली ठानी ।

इन्द्रियों के भोगों रसों में फंसकर, बाल-बच्चों की Attachment (मोह) में आकर यह दुनिया का रूप बन गये, यही फाग खेलते हैं और बस। ''जहां आसा तहां बासा।'' किसके साथ लगें ? उसके साथ जो फना (नाश) से रहित है। यह बदल जायेंगे। कौन भाई, कौन मीत, कौन स्त्री, कौन पुरुष। यह उनका नज़रिया है। वहां बन्धन कहां आयेगा ? वह सबसे आजाद है, और सबसे बन्धा हुआ भी है। मगर आत्मा की नज़र से, जिस्मों की नज़र से नहीं, रिश्तों की नज़र से नहीं, हकीकत की नज़र से। बात यह है भई, जिनकी वह आँख खुलती है वह काम तो सारे करते नज़र आते हैं, मगर वह उन बन्धनों में नहीं हैं। एक मान्दरी है। वह सांपों में रहता है मगर ज़हर के असर को कबूल नहीं करता। गले भी लिपटाता है,मगर उसकी ज़हर को नहीं लेता। दूसरा जो मान्दरी नहीं है, वह पास से गुज़रे और सांप फुँकारा मारे तो वह ज़हर चढ़ जाती है। तो जैसा जैसा इन्सान, जिस जिस रंग में रंगा है ना, वैसी ही सोहबत का असर होगा। 'जैसी सोहबत वैसा रंग।'' तो महापुरुष क्या कहते हैं ? भाईयों ! हकीकत परस्त बनो। ऐसी सोहबत अख्तयार करो, जो तुमको हकीकत की तरफ से नज़दीक लाये। बस। जो हकीकत से दूर करे ?

गुजारे मात्र बरतो इन मांहि ।

बड़ी साफगोई की है। हम दुनिया में दुःखी क्यों है ? उसका कारण यही है। सेन्ट अगस्टिन ने कहा कि जो चीजें हमको बर्तने के लिए मिली थी, यह जिस्म, इन्द्रियां, बाल-बच्चे, रुपया-पैसा, जायदादें, यह हम भोगने लग गये। इनमें हमें थोड़ी रंग-रलियों का नशा आता तो है, मगर वह रंग रलियां असल में अपनी ही सुरत का इज़हार है। जहां एकत्र हुई वहां सुखी होंगे, जब बिछड़े, दुखी हो गये। मगर इनका नतीजा, हश्र क्या हुआ ? बार-बार दुनिया में आते रहे। कहते हैं बाल-बच्चों, स्त्री, दोस्त, मित्र, रुपया-पैसे के बन्धन में भूल रही है दुनिया होली खेल रही है। बताओ ऐसी होली किस काम की है जिसने तुमको प्रभु से जुदा कर रखा है? इनसे काम लो। यह काम लेने के लिए तुमको दिये गये, भोगने के लिये नहीं। तुम आत्मा हो। आत्मा ने प्रभु का रस लेना है, परमात्मा का। उसके पुजारी बनो। बस। जिसके अन्तर उसकी चाह है, वही तुम्हारा बन्धु है, वही भाई है।

मेरे हर प्रीतम की कोई बात सुनावे सो भाई सो मेरा वीर ।।

यह उनका कुनबा है। उनका भाई बन्धु कौन है, जो भी उस प्रभु के पुजारी हैं ? घर प्रहलाद का भी था। हरणाकश का बच्चा था। वह (प्रहलाद) हकीकत परस्त था। पिता नहीं था। समझे ! पिता हो सकता है हकीकत परस्त हो, बच्चा न हो। पिता डॉक्टर हो सकता है, बच्चा डॉक्टर न हो। जरूरी नहीं, हो सकता है, नहीं भी होता। अरे भई हकीकत परस्त बनो। देखो आँख खोल कर बात क्या है! उसकी जहां झलक नजर आयेगी, जहां झलक होगी वहां परवाने जायेंगे। यह एक जगह की बन्धी हुई, एक कौम और समाज में बन्धी हुई नहीं।

मेरे पास एक दफा एक आदमी आया। बाबूलाल एक पटवारी है, जब हम कनौना गये थे, तो वहां वह आये। प्रचार किया गया कि भई यहां गुन्डों का झुन्ड आ रहा है। वहां मत जाओ। खैर लम्बे चौड़े किस्से को छोड़ो, वह सुनने लगे भई गुन्डों का झुन्ड जो है। देखो ना, किसी को न पता हो, कहीं मत जाओ, वहां तो ख्याल आता है देखो तो सही बात क्या है ? कम से कम दो चार सौ आदमियों को इकट्ठा होना था, मेरे ख्याल में दो चार हजार आदमी इकट्ठे हो गये। खैर गये। सत्संग सुना। तो मेरे कहने का मतलब क्या है कि इजहार में जो ताकत आई है ना, वह तो रंग पकड़ती है, ख्वाहे रस्ते में रुकावट कुछ भी बन जाये। कैसी भी बन जाये।

तो लोग जाते हैं। तो वह भाई क्या कहने लगा, एक थे महर्षि शिवब्रतलालजी के उपदेशी थे, उन्होंने सुनाया। उनका नाम था, बाबूलाल। कहने लगे, मैंने सुना भई, पूछा क्या गुन्डे हैं? कहने लगे, पहिले खत्रियों के थी, फिर जाटों की आ गई, फिर खत्रियों की। कहने लगे, मैंने सुना, भई नया एक गुरु बन बैठा है, खत्री, चल के देखें। महर्षिजी ये कहते थे। जरूर जायेंगे हम। वह भी आये, उनका बच्चा भी आया, उनका दामाद भी आया। सत्संग सुना। उठकर कहने लगे, मैंने कुछ कहना है। तो कहते हैं मैं तो यह देखता हूं यह महर्षिजी बैठे हैं। खैर Impress (प्रभावित) हुआ। फिर मैंने पूछा कि तुम आये कैसे ? कहने लगे बात यही थी। महर्षिजी यह कहते थे। यह सारा हाल जो ऊपर बयान किया उन्होंने सुनाया ।

फिर दूसरी बार जब हम जरौली शायद गये थे, तो फिर वह बीस मील से साइकिल पर लाते मारते हुये पहुंच गये। कहने लगे ! जी महर्षिजी ने जो आखिरी नज़्म कही है, उसमें तुम्हारा ही नाम हर कड़ी में दिया है और किसी का क्यों नहीं दिया ? तो मेरे अर्ज़ करने का मतलब यह है, कि हकीकत है। बाहरी रंग रलियों में हम भूल रहे हैं। हो सकता है एक ज्योति आज लुहार के घर में है, कल तरखान के घर में हो, परसों रंगरेज के घर में हो। यह कोई बन्धी

हुई तो नहीं है। जहां पर ज्योति जगेगी, वहां परवाने जायेंगे। हज़ार रोको। तो ऐसी चीजें फैलाव में ले जाने वाली हैं, जो दूसरों की आँखों और कानों पर एतबार करने वाले हैं, वह उनकी बन जाती हैं, सन्तों को जरा आराम हो जाता है। उनको छाँटना नहीं पड़ता। समझे। वही लोग आते हैं जो सचमुच हकीकत परस्त हैं, बाकी नहीं आते।

निंदा चौकीदार बिछाई, आन जीव धँसने नहीं पाई ।

तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, अरे भई किन रंग रलियों में जा रहे हो। हकीकत परस्त बनो। क्यों जीवन बरबाद कर रहे हो।

भोग रोग परिवार बंधानी,
फगुआ खेली होली ठानी ।
धूल उड़ाई छानी खाक,
पाप पुण्य संग हुई नापाक ॥

नतीजा क्या हुआ ? इन्द्रियों के भोगों-रसों में और नापाकी मलिनता बढ़ती गई। जीवन गन्दा होता गया। जहां आसा तहां बासा। जो मैल आगे चढ़ी थी, सेर और मन पर चढ़ गई। परमात्मा कहीं बाहर नहीं। एक बल्ब हो तो, बल्ब। अगर आप उस पर स्याही के पर्दे चढ़ाते जाओ तो रोशनी रहते हुये भी नहीं नजर आती। जितने पर्दे चढ़ेंगे उतनी ही गुम हो जायेगी। तो मन की सफाई पहली चीज है। यह शीशा है भई। इसको साफ सुथरा करो।

चुनर मेरी मैली भई मैं काह पे जाऊँ धुलान ।

स्वामीजी महाराज ने फ़र्माया है, कहते हैं, बड़े-बड़े घाटों पर गई, मगर कोई ''धुबिया मिला न सुजान''कोई सुजान धोबी नजर नहीं आया। कोई मिला, इन्द्रियों के साधन बतलाता रहा, बाहर। फिर ! पर्दों में रहा। कोई मिला Will force को Strong करता रहा। और हंगता (अहं) बढ़ती रही। और आने-जाने का सामान बनता रहा। कोई गये, बाहिरमुखी साधनों में लगाते रहे। जमीन की तैयारी में ही लगे रहे,बना कुछ भी नहीं। हकीकत को नहीं पाया। कहते हैं, बड़ी जगह गये, मगर कोई ऐसी हस्ती नहीं मिली जो हमारी सुरत को, जो आगे ही इन्द्रियों के भोगों- रसों में लम्पट हो रही थी, और इसी में लगाने में लग रहे हैं। इससे निकलने कोई सामान नहीं। कहते हैं, बड़े उदास चित्त हुए। आखिर एक सखी ने कहा कि हाँ सत्गुरु है। ऐसा धुबिया है जो धो डालता है अनुभवी पुरुष । जब उसके पास जायेगा तो उसका पहिले ही दिन का सबक क्या है ? छोड़ो यह होली, चलो ऊपर। इन्द्रियों का घाट छोड़ो। उसकी ए.बी.सी. तालीम की वहां से शुरु होती है, जहां दुनिया के फिलसफे खत्म हो जाते हैं। जितने दुनिया

के फिलसफे हैं, उनका ताल्लुक इन्द्रियों के घाट से है। जितने साधन इन्द्रियों के घाट के हैं, तुम आगे ही इन्द्रियों का रूप बने बैठे हो, उनके करने से आप इन्द्रियों से ऊपर कैसे जा सकते हो ?

लगाओ सुरत अस्थान अलख पर,

यह कबीर साहब कहते हैं। अपनी सुरत को लगाओ वहां पर, इन्द्रियों के ऊपर, अलख पर, जो लखा नहीं जा सकता इन्द्रियों से।

जां को रटत महेशा ।

जहां महेश भी, शिव भगवान भी, टेर रहे हैं। आपको पता है, शिव नेत्र यहां (माथे) पर बनाई जाती है नीचे नहीं, इन्द्रियों के ऊपर। तुम भी अपनी सुरत को वहां लगाओ। जब इन्द्रियों से ऊपर आओगे।

इन्द्री जीत पाँच दोख ते रहत ।

जो इन्द्रियों को दमन कर ले वह पाँचों के दुःख से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार के हमलों से बच जाता है। फिर कहा कि -

दस इन्द्रे जो राखे बास तां के आत्में होय परगास ।

जो दस इन्द्रियों को दमन कर ले, अन्तर्मुख कर ले, ऊपर आ जाये, ज्योति प्रगट हो जायेगी। वह कोई दूर नहीं, सिर्फ Inversion का सवाल है, बाहर से हटो। सब महात्माओं का यहीं उपदेश रहा है। और अब भी है। किसी महापुरुष की वाणी लो, यही सब महापुरुष कहते हैं। ईसाई महात्मा कहता है, If ye shut the ten doors of the body, you will see the light of heaven. अगर तुम इस जिस्म के जो दरवाजे हैं, इनको बन्द कर लो, बाहरमुखी फैलाव से हट जाओ, तो तुम्हारे अन्तर उस परमात्मा की ज्योति जगमगा उठेगी। आगे ही मौजूद है, अब भी है। सिर्फ हम बाहरमुखी हैं। सारी उम्र ही इन्सान बाहर भटकता रहता है मगर हकीकत से दूर रहता है। हकीकत कहीं दूर नहीं, हम में है,मगर Inversion (अन्तर्मुख होने) का सवाल है। उधर से सोया रहा, इधर से जागता है। जब अनुभवी पुरुष मिलता है, वह अन्दर से जगा देता है। बाहर से हटा देता है। नजरिया तो यह है। बताओ हम कहां हैं ? सन्तों का उपदेश हमें क्या बतलाता है, हम किन रंग-रलियों में जा रहे हैं ? कौन सी होली मना रहे हैं ? और वह कौन सी होली मनवाना चाहते हैं, वह आगे बतलायेंगे। क्या इस बाहरी रंग-रलियों में हम सुखी हैं ? बिलकुल नहीं किसी से पूछो वही दुखी है।

नानक दुखिया सब संसार ।

ऐ नानक ! सारा जहान ही दुखी है। यही स्वामीजी महाराज ने फ़र्माया है -

सुरत तू दुखी रहे हम जानी ।

हम जान रहे हैं कि तू दुःखी है। कब से ?

जा दिन ते तैं सबद बिसारा मन संग यारी ठानी ।

तेरी आत्मा जब उस इजहार में आई हुई ताकत परमात्मा की जो है, Into expression जो आई उसको शब्द कहा है, उससे तेरी आत्मा जुदा हुई, मन की यारी की, मन ने इन्द्रियों के भोगों-रसों में लम्पट किया बस तुम दुखी हो गये। हकीकत से दूर हो गये। इसी का इलाज वह बतलाते हैं -

सो सुखिया जिस नाम आधार ।

सब महापुरुषों की एक वाणी है। If thine eye be single thy whole being shall be full of light. अगर तुम्हारी एक आँख बन जाये तो तुम्हारे सारे जिस्म में नूर भर जायेगा। भरा हुआ तो अब भी है। उस Beauty को और उस शान को, जो तुम्हारे घट-घट में है, अगर तुम पा लो तो बाहर की दुनिया भूल जाये । All glory and beauty lies within you.

जब वह रस आवा यह रस नहीं भावा ।

तुलसी साहबजी के मुतल्लिक ज़िक्र आता है, वह बयान करते हैं, कि जब हम पिण्ड, अण्ड, से ऊपर गये ब्रह्माण्ड में, देखा, वाह वाह बड़ी खूबसूरत दुनिया है। और उसका गुरु नानक साहब ने ज्ञान खण्ड में बयान किया है। ''कई कान महेश'' कई Universes (दुनियायें) बन रही हैं, ऐसी लाबयान चीजें हैं, जो बयान में नहीं आ सकती। तो कहते हैं, जब वहां थे तो वाह-वाह यही आला दुनिया है। कहते हैं, जब हम ब्रह्माण्ड से भी पार गये नां, पार ब्रह्माण्ड में पहुंचे तो फिर यह समझा कि यह ब्रह्माण्ड तो एक मेहतरों की टट्टी है भई। यह उनके बयान हैं, जिन्होंने देखा है। हम बाहर लम्पट हो रहे हैं, इसी में रंग-रलियां माण रहे हैं। सुखी कैसे हो सकते हैं ? आप देखिये, कौन सी वह हमें होली बतलायेंगे अभी आगे आ रहे हैं। अभी बाहर का नजरिया पेश कर रहे हैं, किस हालत में जीव जा रहे हैं, कौन सी होली खेल रहे हैं।

इसका नतीजा दुख ही दुख है। धर्म वही हैं, याद रखो, जिसका नतीजा सुख हो। जिसका नतीजा दुख हो? फिर ? हम दुःखी हैं या सुखी ? जो कुछ भी हम कर रहे हैं, अब तक, ख्वाहे नेक रस्ते में या बद रस्ते में, उसका नतीजा हमें क्या हो रहा है ? सुखी हो गये तो अच्छी बात, नहीं हुये तो अभी, हनोज दिल्ली दूर अस्त।'

तो अब यह बतलायेंगे। वह कौन सी होली है, जिसके खेलने से हम सुखी हो सकते हैं? हमारा आना-जाना खत्म हो सकता हैं। जीवों के दुःख को देखकर,जीव कितने दुःखी हैं, इसका ज़िक्र करके फिर, यह दुःख को सुनकर, आखिर बच्चे की हालत को दुःखी देख कर पिता ही को रहम आता है ना। कितना भी नाफर्माबर्दार (अवज्ञा करने वाला हो,) फिर भी, हजूर हमारे फर्माते थे, एक बच्चे को मुकद्दमा बन गया,कैद में चला गया, तो उसकी अपील कौन करता है ? उसका पिता ही। ख्वाह वह गुनाहगार ही हो। तो सन्तों को दया आती है। यह आत्मा उस प्रभु की अंश है। उनके सन्तों के अन्तर प्रभु बोलता है। कहते हैं, यह सब बच्चे हैं, अच्छे हैं या बुरे। दुःखी देखकर वह परमात्मा, जो दया का समुन्दर है, उभार में आता है और किसी Pole (मानव देह) पर मुजस्म (सदेह) होकर दुनिया को सीधा रस्ता दे जाता है।

धूल उड़ाई छानी खाक,
पाप पुन्न संग हुई नापाक ।
(6) **इच्छा गुन संग मैली भई,**
रंग तरंग वासना गही ।

2 lines

कहते हैं दुनिया में मैलें किस तरह चढ़ती हैं ? एक खाहिशात (इच्छा) से। अब इच्छा भवानी को जब तक मारोगे नहीं, काम नहीं बनेगा। सब महापुरुष यही कहते हैं Be disireless. इन्द्रियों के भोगों - रसों से हटो। तरीका बयान ही है ना। 'जहां आसा तहां बासा ।' अगर ख्वाहिश ही न रहे, फिर क्यों आदमी उधर जायेगा ? तो इच्छा के ज़रिये से इस पर मलों की मलें चढ़ रही है।

जन्म जन्म की इस मन को,
मन लागी काला होया स्याह ।

उस कालिख को उतारना था। जिस रस्ते से कालिखें या मैल आती थीं, उसको बन्द करना था। उसका पता ही नहीं। और मैलों पर मैलें चढ़ रही है। 'इक भा लत्थी नहातियां दो भा चढ़ गई और।' यह हालत है।

मन मैले सब किछु मैला
तन धोते मन अच्छा न हो ।।

समझे ? जिसका मन मैला है, उसका सब कुछ मैला है। तन के धोने से मन साफ नहीं होवेगा ।

यह जगत भरम भुलाया बिरला बूझे कोय ।।

सारा जगत ही भ्रम में भूल रहा है। बाहरमुखी साधनों में लगा है। हकीकत से दूर हो रहा है। दिनों दिन मैलों की मैलें चढ़ रही हैं। नेक कर्म करते हैं, तो भी बन्धन में हैं। बद करते हैं तो भी बन्धन में है।

नरक स्वर्ग फिर फिर औतार ।

यही भगवान कृष्णजी ने फर्माया है। 'नेक और बद कर्म, दोनों ही, जीव के बान्धनें के लिए एक जैसे हैं। जैसे सोने की बेड़ी और लोहे की बेड़ी। जब तक यह Selfless (निःकर्म) नहीं Conscious coworker of the divine plan बनता, इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर उसके देखने वाला नहीं होता, हंगता (अहं) जाती नहीं है। बात तो यही है कि जीव इस तरह से दुनिया में फंस रहे हैं, इच्छा से, Desire से, दिनों दिन ख्वाहशित बढ़ रही है। जो सौ के पीछे था, वह हजार के पीछे है। हजार वाला, लाख के पीछे है।

सहस खटे लख को उठ धावे,
तृप्त न आवे माया पाछे पावे ।।

बस ! इस हालत में दुनिया जा रही है। झोंपड़ी वाला कहता है, हमारा महल हो। महल वाला कहता है, हमारा शीशमहल हो। शीशमहल के साथ फिर मोटर हो, हवाई जहाज हो। बढ़ती ही जाती है ख्वाहिश, वह इतना ऊँचा है। अरे भाई सन्तुष्टि है, तो नीचे वालों को देखो, तब तो सन्तुष्टि आये। ऊपर हो देखता ऊपर देखता चला जाता है। उसका नतीजा क्या है? जो अब आप अपनी तरफ नजर मार कर देखो, आज, जो आप बीस साल पहले थे, आज तुम कहां हो। उस वक्त जो ख्वाहिशात थी, अब ख्वाहिशात बढ़ी हैं, या कम हुई हैं ? कहोगे, ज्यादातर बढ़ गई हैं। आगे कम Attached थे, अब ज्यादा हो Attached गये। त्यागी भी थे, लैक्चर और कथा भी देते थे। मगर देते हुए हम मोह में बन्ध रहे हैं। जरा नजर मार कर देखो, दिल से कशिश होती है। यह कशिश कैसे बनती है ? दिली ख्वाहिश उसमें लगी रही, किसी तरीके से बसती रही, बसती बसती खिंचावट बन गई। कहां जाओगे ? जहाँ वह जाता है।

आप देखें, सन्तों का नजरिया क्या है ? हम को छुड़ाने का, आज़ाद करने का, जीतेजी। मगर दुनिया बन्धन डालती है। वह बन्धनों से आजाद होते हैं Revolt करते हैं, समझे, अनुभव को पाकर, क्योंकि हकीकत को वह देख रहे हैं। बनावट की बात नहीं Acting posing वाले, मुंह के बल गिर जाते हैं। बस। और गिरेंगे, जो मन इन्द्रियों के घाट के गुलाम हैं वह कब तक छुपे रहेंगे। The cat must be out of the bag. आखिर असलियत दुनिया में ज़ाहिर हो जायेगी। तो कहते हैं, इच्छा के सबब से हम दुनिया में बंध रहे हैं। बस। इच्छा को दूर करो, इससे मलें बढ़ रही हैं। ''गुरु दिखलाई मोरी।'' जिनसे यह इच्छा बढ़ती है।

गुरु दिखलाई मोरी, जित मृग पड़त है चोरी ।।

गुरु हमें वह मोरियां दिखलाता है, इन्द्रियों के घाट, जहां से यह हमले आते हैं, मैलें चढ़ती हैं।

मूंद लिए दर्वाजे तां बाज लिए अनहद बाजे ।।

जब दर्वाजों को Set कर लो, अनहद की ध्वनि अन्तर हो रही है, उसके सुनने वाले हो जाओगे, हकीकत के देखने वाले हो जाओगे। बात तो यह है।

फल पाया भुगती चौरासी, कालदेस जहाँ बहुत तिरासी ।

इसका नतीजा और हश्र क्या हुआ ? कहते हैं, इन्द्रियों के भोगों-रसों में रहे, जहाँ Attach (जुड़े) वहां आते जाते रहे और क्या ! नतीजा यही होता है। बार-बार चक्कर काटता है। ''जहां आसा तहां बासा।'' तो फ़र्माते हैं कि इच्छा को दमन करो Be desireless. जितनी ख्वाहिशात कम होंगी, उतने सुखी हो जाओगे। जिसको कोई खाहिश नहीं, खाहिशत की भी एक हद होती है। यह तन को भी खाहिश इन्द्रियों के भोगों-रसों की, जब हट जाये Right use हो इन्द्रियों का, तब तो काम ठीक। हमें बरतने के लिये यह मिली थीं, हम भोगने लग गये। आत्मा ने भोग लेना था परमात्मा का, उसका पता ही नहीं। क्योंकि सारी उम्र इन्द्रियों के ही घाट पर रहा है।

Values of life का सवाल बतलाते हैं सन्त, कि भई बाहरी सामान संयोगों से बने हैं। इनको निभाओ। लेने देने का सम्बन्ध प्रारब्ध कर्मों के अनुसार है। उसको खूबसूरती से अदा करो। सबमें आत्मा है। आत्मा देहधारियों से प्यार करो, क्योंकि तुमने प्रभु को पाना है न ! प्रभु सब घट-घट में है, तो सब के साथ प्यार होगा कि नहीं ? उनका नजरिया यह है। जिस्म है, यह हरि मन्दिर है। इसको पा लो, साफ सुथरा रखो। बाहर से भी, अन्तर से भी। हम बाहर से तो साफ रखते हैं, अन्तर से नहीं रखते। नतीजा आप देख रहे हैं। हम दुःखी हैं। हम आत्मा थे देह-धारी। आत्मा, इन्द्रियों के भोगों-रसों में लम्पट होकर जिस्म का ही रूप बन गई। अब बाहर से सफाई है, अन्तर गिलाज़त भरी पड़ी है। अगर गन्दगी का ढेर हो, ऊपर

रेशमी कपड़ा डाल दो। अगर Scent (इत्र) भी डाल दो, तो भी बदबू आयेगी ना उसमें ? बर्फ हो, उस पर काला कम्बल डाल दो, ठण्डक आयेगी। तो जो अन्तर की बस रही हालत है, असर देगी। हमें अन्तर से सफाई चाहिये बाहर की सफाई के साथ। बाहर की सफाई भी हो, Cleanliness in next to Godliness ठीक है। मगर जब तक अन्तर की सफाई नहीं, तब तक काम नहीं बनता।

अन्दरों कुसुद्दां कालियां बाहरों चिटमुंहियां ।
रीसां करें तिनहाडियाँ जो सेवन दर खड़ियाँ ।

तो अनुभवी पुरुष के अन्दर, यह शरीर हरि मन्दिर है, इसमें उसका प्रभु प्रगट है। हमारा कहां है ? हम गलाजत से भरे पड़े हैं। है वहीं मगर गलाजत, मैलों, के सबब से वह नजर नहीं आ रहा है। तो कहते हैं, हमारा दुनिया में बार-बार आने का कारण इच्छा है desires, तो Be desireless महात्मा बुद्ध ने कहा Right use of everything अच्छा है। सबसे बड़ा आदर्श जो मनुष्य जीवन पा कर है, वह प्रभु को पाना है। आत्मा का अनुभव पहिला कदम है। परमात्मा का अनुभव दूसरा कदम है। जिसने अपने आपको नहीं जाना, वह प्रभु को कैसे जान सकता है ? अपने आपके जानने के रस्ते में हायल (पर्दा) क्या है ? इन्द्रियों के भोग-रस। सब महात्मा यही कहते हैं Ethical life is stepping stone to spirituality. सदाचारी, नेक पाक जीवन, परमार्थ कहो, रूहानियत कहो, उसका पहिला ज़ीना है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि संयोगों का सिलसिला है। दुनिया सारी ही फाग और होली खेल रही है, इन्द्रियों के भोगों-रसों में लम्पट हो रही है। अपने आपकी तरफ से सो रही है, बाहर दुनिया में जाग रही है। नतीजा ? जन्मों जन्मों से दूर है। अभी तक पहुँची नहीं। ऐसी होली हर एक इन्सान खेल रहा है। और इसका नतीजा क्या है ? जिससे पूछो वही दुखी है। तो आगे यह बतलायेंगे कि यह होली, इस दुःख दर्द को कैसे दूर कर सकते हैं ?

आस त्रास माहिं अति फंसी, देख देख तिस माया हंसी ।

हर एक आदमी आसा में लगा है। आज इसकी कल उसकी, परसों उसकी। कई भय बस रहे हैं, अहा ऐसा हो गया, ऐसा न हो जाये ! दो ही चीज़ों में इन्सान मारा जा रहा है, लम्पट हो रहा है दुनिया में। और इस हालत में, जीवों की इस हालत को देख कर, माया हंसती है। माया किसको कहते हैं ? माया भूल का नाम है। खूब जीव फंस रहे हैं, भूल में जा रहे हैं। हकीकत से बेखबर हैं। आलिम हैं या बेइल्म हैं, एक Grand deception (धोखे) में जा रहे हैं। यह था आत्म देहधारी,बन गया देहरूप। अब चलाने वाला, जो इस मकान का मकीन (निवासी) है, उसको भूल गया, जो कि इसका अपना आप था।

हरचे मा करदेम बर खुद हेच न बीना न कर्द।

जो कुछ हमने अपने आपके साथ जुल्म किया है, कहते हैं, किसी अन्धे से अन्धे इंसान ने भी नहीं किया। कहते हैं वह क्या है ?

गुम करदेम दरीं खाना साहिबे खाना रा ।

इस घर के मकीन को भूल गये। वह कौन है ? आप को पता है, हम कौन है ? जिस्म का रूप बने बैठे हैं कोई अनुभवी पुरुष देखता है, मैं इसके चलाने वाला हूं। उसका नजरिया ही कुछ और आत्मा के Level से बन जाता है। हमारा नजरिया जिस्म के Level से है। आलिम है या बेइल्म, सब ही इसी भूल में जा रहे हैं। जो अपने आप को प्रभु भी कहलाते हैं। ''अहं ब्रह्म असमी।'' वह भी इस भूल से अभी निकले नहीं, बुद्धि के द्वारा कह रहे हैं मगर Analysis (जड़ से चेतन को अलहेदा) नहीं किया, आत्म अनुभव को नहीं पाया, भूल में त्रास में भी, जा रहे हैं। हाय यह न हो जाये, हाय मर न जायें !

मैंने हाल ही में हरिद्वार के एक ऐसे महापुरुष के मुतल्लिक बयान सुना है कि वह है तो ''अहं ब्रह्म असमी,'' मगर कोई रुपया दे गया रात को दो लाख। चोर आ गये कि भई दो, नहीं तो मार देंगे। कि अच्छा भई, ले जाओ भई। फिर कहा, देखो मैं फलाना हूं। अगर तुमने मेरा नाम बताया तो तुम्हें मार दिया जायेगा। नाम नहीं बतला सके कि मार ही न जायें। अरे भई जो प्रभु का रंग बन गया, उसको मरने का क्या खौफ है ? हमारे अन्दर कुछ और चीज है, ज़बानदानी से कुछ और है। रहनी का सवाल है। जो अनुभव को पा चुके हैं, अरे भाई उनका तो नज़रिया ही और बन जाता है। वह असूल परस्त रहते हैं, सत के पुजारी रहते हैं। दुनिया उस सच के असूल से गिर कर बार-बार दुनिया में आती है। आते हैं, और जाते रहते हैं। कहते हैं, माया कहती है, वाह, खूब जीवों को फंसाया है। सब भूल में जा रहे हैं।

एह शरीर मूल है माया

माया का मूल यहां से शुरु होता ? यह था जिस्म के चलाने वाला, जिस्म का रूप बन गया। यह सारा देखने वाला नजरिया ही बदल गया।

हंस-हंस माया जाल बिछाया,
निकसन की कोई राह न पाया ।

कि माया, भूल कहो, Deception कहो, जिसमें दुनिया जा रही है। नया से नया लब-

लालच का दाना डाल रही है। हर एक इंसान हर रोज किसी न किसी लालच की खातर बन्ध रहा है। हवा में आजाद उड़ने वाले परिन्दे पिंजरों में कैसे कैद होते हैं ? शिकारी जाल बिछाता है, और दाना डाल देता है। दाने की हवस में आकर मुंह मारता है, पकड़ा जाता है। यही हालत और महापुरुषों ने भी बयान की है। समुन्दर में मछली दरिया में आजाद फिरने वाली है। शिकारी थोड़ा कुन्डियों में आटा या कुछ और लगाकर डाल देता है। खाने की हवस में हड़प करती है, गले में फंस जाता है, तड़प-तड़प कर मरना पड़ता है। तो दुनिया में फंसाने वाला लब-लालच ही है, Desire ही न हो,फिर ! अब Desireless कैसे हो ? कौन सी चीज है, जिसके पाने से सब कुछ पाया हुआ सा हो जाता है ? जब तक वह न मिले ! वह तुम्हारे अपने आपे के अन्तर ही है, बाहर नहीं है। जब तक इन्द्रियों के घाट से उलटते नहीं, ऊपर नहीं आते, उस हकीकत को पा नहीं सकते जिसको पा कर तुम संतुष्ट हो सकते हो।

नाम मिलिये मन तृपतिये ।

वह परमात्मा इजहार में आई सूरत Expression जो है, वह महाचेतन प्रभु है। हमारी आत्मा चेतन स्वरूप है, Conscious entity है। जब मन-इन्द्रियों के घाट से आजाद होकर उसमें लगती है, यह सन्तुष्ट हो जाती है। It desires for no more (कोई खाहिश नहीं रहती) उस महारस को पाकर। Commission (पर्वाना) लेकर वह (महात्मा) आ जाते हैं, कैदियों की शकल में कैदियों को निकालने के लिये। अन्तर से प्रभु से जुड़े होते हैं,बाहर दुनियां से जुड़े होते हैं। हमजिन्सियत (सहजातियता) कुदरती खासा है। सोहबत का रंग मिलता है। जो दुःखी दुनिया है, फिर सुख की तरफ रजू कर सकती है।

(9) तब संतन चित दया समाई, सतलोक से पुनि चलि आई।

सन्त किसको कहते हैं ? यह रूहानियत की आला से आला डिग्री है, Hightest डिग्री है, एम.ए. पास। जिनकी आत्मा प्रभु का रंग ले रही है, Mouthpiece of God बन गई। जैसे लोहे का गोला आग में पड़कर आग का रूप बन जाता है। ऐसी हस्ती का नाम कह दो। और महात्माओं ने एकता बयान किया है -

जैसे जल में जल आये खटाना,
त्यों संग ज्योति ज्योति मिलाना ।

जो इस अनुभव को पा रहे हैं, वह प्रभु उस Pole को फिर दुनिया में काम करने के लिये,जीवों को निकालने के लिये भेजता है, उसको कमीशन (पर्वानगी) मिल जाती है। कहते हैं, ऐसी हालत दुःखी देखकर जीवों की, आलिम बेइल्म, अमीर-गरीब, हाकिम महकूम, सब एक ही भूल में जा रहे हैं, रंग-रलियां इन्द्रियों के भोगों रसों की मान रहे हैं, होली खेल रहे हैं,

दुःखी हो रहे हैं, वह आते हैं, भई जीव दुखी हो रहे हैं । किसी की लड़की या बच्चा दुखी हो तो पिता क्या करता है ? वह चाहता है, इसका दुख दूर हो जाये । Out of the way होकर भी उसको दुःख से निकालना चाहता है। जो दुःखी प्रतीत करते हैं ना अपने आपको, उन्हीं के निकलने का सामान बनता है। जो मस्त हो रहे हैं, खाने-पीने में, उनका अभी नहीं। ''हनोज दिल्ली दूर अस्त।'' जो कहते हैं, खाओ पियो और मजे करो। Eat drink and be merry में जो लग रहे हैं, अभी उनको इसका एहसास नहीं हुआ। जिनको इस बात का एहसास होना शुरू हो गया, वाकई मैं तो दुखी हूं, Awakening (जागृति) आती है। जहां आग जलती है, वहां आक्सीजन मदद को आती है। परमात्मा का असूल है Demand and supply (मांग और पूर्ति) का, अनुभवी पुरुष, जिस Pole पर मालिक का एहसास हो रहा है, या देख रहे हैं, Mouthpiece बन गये, जो वह कहते हैं, यह जीव फंस रहे हैं। लोग बुरा भी कहते हैं तो भी उनको निकालने की करते हैं कि वह किसी तरह से बच जायें। लोग ऐसे पुरुषों को कुराहिया भी कहते हैं, कहते रहे, यह भई लोगों की अकलें बिगाड़ता है। भई ठीक है, वह सत की तरफ रजू करता है, दुनिया की तरफ से, उसकी Right values देता है जो उस रंग में (दुनिया के रंग में) रंगे हैं, उनकी नजर से वह कुराहिया (पथभ्रष्ट) है और क्या कहें। मगर, लोग अच्छा कहें या बुरा कहें, जो हकीकत परस्त (सत्य के पुजारी) हैं, वह हकीकत को पेश करते रहते हैं भई हकीकत यह है, तुम में है। बाहर से हटो, हकीकत को पाओ। सबके अन्तर परमात्मा है, वही हकीकत काम कर रही है।

यक हकीकत जलवा गर दर कुफो इस्लामस्तो बस ।

एक हकीकत सब मोमिनों और काफिरों में, नास्तिकों और आस्तिकों में, काम कर रही है।

इखतलाफाते मजाहब जुमला अवहामस्तो बस।

इखतलाफ (भेद) जो अब हमें नजर आ रहे हैं, हमारे Personal whims (वहमों) का नतीजा यह है। समझे !

अज तास्सुब कासये शेखो ब्रह्मण शुद जुदा ।

तास्सुग और तंग-नजरों के सबब से शेख और ब्राह्मण के प्याले अलैहदा-अलैहदा हो रहे हैं।

वरना दर मैख़ाना एक साकी व जामस्तो बस ।

हकीकत तो एक है। उसका नशा भी एक है। पिलाने वाले अनुभवी नहीं, जिन्होंने इस नशे को पाया है। फिर ? जैसी सोहबत वैसा रंग ।

तब संतन चित्त दया समाई,
सतलोक से पुनि चलि आई ।

ऐसे पुरुषों को कमीशन (पर्वानगी) हो जाती है यह कहो, जिस तरह दुनियां में कमीशन है। यह कोई रिपब्लिक नहीं कि प्रेजिडेंट पब्लिक ने चुन लेना है। यह परमात्मा की तरफ से, जो अनुभवी होते हैं, उनको कमीशन है, जाओ बच्चा, यह काम करना है। उनसे काम ले लेता है उस पोल पर बैठ के।

ज्यों त्यों चौरासी से काढ़ा,
नर देही मैं फिर ले डाला ।

ऐसे पुरुष फिर मनुष्य जीवन पाते हैं उनकी दया से, बरकत से Contact (सम्पर्क) से ।

चरण प्रताप शरण में आई,
तब सतगुरु अति कर समझाई ।

कहते हैं, वह आते हैं, जो हकीकत के मुतलाशी (खोजी) होते हैं। झलक देखते हैं, थोड़ा नशा मिलता है। वहां चरणों में आ जाते हैं। समझे ! चरण प्रताप फिर शरण में वह आते हैं। तो जो सतस्वरूप हस्ती है, कहते हैं भई सुख का तरीका यह है तुम्हारे अन्तर में है, बाहरमुखी साधनों में नहीं You cannot pray God with hands but with the spirit. कहते हैं इन्द्रियों के घाट पर तुम आगे ही अपराविद्या के साधनों में लग रहे हो, यह Elementary step है, इससे मुक्ति नहीं। ग्रन्थों-पोथियों के पढ़ने से शौक बनता है, रुचि बनती है बाहरी पूजा-पाठ, रस्म-रिवाज करने से भक्ति बनती है। यह जमीन की तैयारी है। इससे फायदा उठा लो, मगर इसमें मुक्ति नहीं। मुक्ति पराविद्या से है, आत्मतत्व के बोध से है। अपने आपको जानो और प्रभु को पहिचानो ! यह समझाते हैं सत्स्वरूप महापुरुष कि अरे भई, हकीकत तुम में है, जिसको तुम तलाश कर रहे हो बाहरमुखी, यह तो तुम में है। जो जहां हो वहीं मिलेगा ना।

वस्तु कहीं ढूढें कही, केहि विधि आवे हाथ ।
कहें कबीर तब पाईये जो भेदी लीजै साथ ॥

जो राज (भेद) का वाकफ है उसे लो। वह अदृष्ट और अगोचर है। हम उसको इन्द्रियों के घाट पर, जो दृष्टमान, दृश्य का ज्ञान है, इसमें ढूंढ़ रहे हैं। इससे काम लेना है। इससे वह मिलता नहीं। जब तक हम भई अदृश्य में न जायें, वह नहीं मिलता।

एवड ऊँचा होवे कोय, तिस ऊँचे को जाने सोय ।।

वह समझाता है। पराविद्या की वह हमें तालीम देता है। आत्म-तत्व का बोध देता है। Theory precedes practice (करने से पहले बात को समझाता है।) In theory there is no way out, all theory no practice. चीज जब तक अनुभव न हो, तब तक Conviction (आस्था) नहीं होती। राजा जनक को याज्ञवल्क्य सिर्फ Theory (सिद्धांत) समझा सके, अनुभव नहीं दे सके। जब पूछा गार्गी ने, ऐ याज्ञवल्क्य ! क्या तुम उस हकीकत के देखने वाले हो जिसका आपने बयान किया है ? कहता है, नहीं। वह सत्यवादी लोग थे। कहते हैं, नहीं, मैं देखने वाला नहीं। फिर दुबारा उनको सम्मेलन करना पड़ा। उसमें एक अष्टावक्र ऐसी हस्ती निकली। तो मेरे अर्ज करने का मतलब है जो देखता है, वह दिखा सकता है। जो खुद इन्द्रियों के घाट पर बैठा है, आपको इन्द्रियों के घाट से ऊपर कैसे ले जा सकता है ? ऐसी हस्ती का नाम है सन्त, ऐसी हस्ती का नाम है साधु महात्मा,कोई नाम रख लो।

हमारे हजूर थे। उनसे एक दफा लोगों ने सवाल किया कि महाराज हम आपको क्या कहें? कहते हैं, मुझे भाई समझ लो, दोस्त समझ लो, पिता समान समझ लो, एक टीचर समझ लो। मेरे कहे के मुताबिक पिण्ड को छोड़ो, चलो ऊपर। उन मण्डलों में अगर तुमको कोई मदद मिले फिर जो चाहे कह लेना। यह बाहरी दृश्य के ज्ञान की तालिम हासिल करने के लिए हम जरूर किसी न किसी उसके आलिम के पास जाते हैं। भई अन्तरी ज्ञान के लिये भी, जो अनुभवी है, उसके चरणों में जाना पड़ेगा। वह अदृश्य का ज्ञान है भई। उसका नाम कुछ रखो। वह यह नहीं कहता कि मैं बड़ा हूं। वह कहता है, ''मानुख मूरत नानक नांव।'' मैं इंसान हूं भई, मुझे लोग नानक कहते हैं।

हम नीच से उत्तम भये।

अरे भई, हम भी तुम्हारी तरह कभी इन्द्रियों के घाट पर थे। और आज गुरुमत के धारण करने से हम उत्तम पदवी को पा गये। There is hope for everybody जो आज एम.ए. में पढ़ता है, कभी पहिली में पढ़ता था। जो पहिली में पढ़ रहा है, क्या वह एम.ए. नहीं बन सकता ? बन सकता है, There is hope for everybody। यह होली इन्द्रियों के घाट से ऊपर शुरू होती है, अन्तर की होली जो है, जिसके खेलने से जन्म मरण खत्म हो जाता है, प्रभु की प्राप्ति मिलती है। तो यह अन्तर की होली है। बाहर इन्द्रियों के फाग खेलने से तुमको बार-बार दुनियां में ही आना पड़ेगा।

तो वह पेश कर रहे हैं, दो नजरिया। एक तो बाहर होली जो हर एक जीव खेल रहा है, इन्द्रियों के भोगों-रसों में, एक अन्तर की होली का। जब सन्त आते हैं, समझाते हैं, भई असल होली तो वह है जिसके खेलने से तुम अपने घर में पहुंच जाओ। अब वह सन्त महात्मा समझाता है सत कहाँ है ? सत का स्वरूप है ना ! सत ही का ज्ञान देता है, हकीकत को अपने असली रंग और मानों में पेश करता है, भई Here is the truth. बगैर बनावट के, बगैर किसी, क्या कहना चाहिये Exaggeration के, बनावट के या रंग आवेजी के, चीज को पेश करता है, Here it is the truth. और उसके Contact को पाया है, दूसरों को देता है। उसकी तालीम इन्द्रियों के घाट से ऊपर शुरू होती है जहां दुनिया के फिलसफे खत्म हो जाते हैं।

तुझको फ़िर कर फागुन आया,
सम्हल खेलियो हम समझाया ।

वह अनुभवी पुरुष कहता है, ऐ इन्सान, ऐ सुरत, तूने बहुत सारी फाग बाहर की तो खेली, इन्द्रियों के भोगों-रसों की। अब नई होली खेलनी सीखो, जिससे तुम्हारा आना-जाना खत्म हो जाये। वह होली क्या है ? आगे अब ज़िक्र करेंगे। बाहर की होली का तो पहिले ज़िक्र किया ना, गाना-बजाना, राग-रंग, यह वह, अरे भई तुम इन्द्रियों के भोगों-रसों में नाचते टापते नजर आते रहे, मस्त होते नजर आते रहे, यह तो तुमको प्रभु से दूर करते रहे। Be desireless (इच्छा को त्यागो) इच्छा ही सब का मूल कारण है। इसको Control में करो, हकीकत को पाओगे तब ही ना, कोई ऊंचा रस मिलेगा, नीचे रस फीके पड़ेंगे। कहते हैं, अब तुम्हारा फिर नये सिरे से फागुन आया है। नई होली खेलने का सामान करो जिससे तुम्हारा आना-जाना खत्म हो जाये। बाहर की होली मनाते हुए, इन्द्रियों के भोगों-रसों के घाट पर इसमें तो तुम हमेशा ही दुनिया में लम्पट रहे, 'जहां आसा तहां बासा'। प्रभु से दूर रहे। अब अन्तर की होली का ज़िक्र करेंगे जो सन्त महात्मा पेश करते हैं, जीवों को प्रभु से मिलाने के लिये।

सुरत कहे सुनो सन्त स्वामी,
कस खेलूं कहो अन्तर्यामी ।

सुरत अब कहती है, महाराज, बताओ वह होली कैसे खेली जा सकती है जिससे मेरा आना जाना खत्म हो सकता है ?

तब सतगुरू इक भेद लखाया,
सुरत जौग मारग बतलाया ।

फिर वह अनुभवी पुरुष कहते हैं, उसको पेश करते हैं सुरत का मार्ग सिर्फ। और मार्ग भी

हैं, मगर सुरत के मार्ग को सिर्फ यह समझ कर यही योग ऐसा योग है, जिससे हर कोई फायदा उठा सकता है। वैसे प्राण योग भी है। असल बात तो यह है कि इन्सान के अन्तर आत्मा भी काम कर रही है, प्राण भी काम कर रहे हैं। आत्मा का अपना काम है, प्राणों का अपना काम है। जब तक इन्द्रियों का घाट छूटे नहीं यहां कदम नहीं रखा जा सकता। तो मैंने पहिले अर्ज किया कि पराविद्या की ए.बी.सी. शुरू होती है, जहां इन्द्रियों का घाट छोड़कर, बाहर से हटकर ऊपर आता है इन्सान। Where the world's philosophies end there the religion start - the way back to God. तो बाहर अब जिस्म में दो चीजें हैं।

योगियों ने भी यह काम किया, क्योंकि आखिर इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर वह चीज मिलती है। तो उसके लिए उन्होंने प्राणों की धारों को भी एकत्र किया है और सुरत की धारों को भी। दो धारें काम कर रही हैं। एक Sensory currents हैं एक Motor currents जो प्राणों की धारे हैं उनका अपना काम है क्या ? सांस चल रहा है, सोते जागते चल रहा है, Automatic (अपने आप) कोई पता नहीं, हर वक्त चलता रहता है, खून का दौरान हो रहा है, गंजा हजम हो रही है, बाल उग रहे हैं, आपको पता नहीं। यह प्राणों का काम है। सुरत का काम है जहां Pinch करो (चुटकी काटो) महसूस करती है कोई चीज। वह सुरत का काम है। तो योगियों ने दोनों को समेटा है। इन्द्रियों के घाट से ऊपर आये आज्ञा या अंजना चक्र पर। यहां से आगे श्रुति मार्ग को पकड़ा अनहद शब्द को पकड़ कर योगीजन सहस्रार में लीन होता है। ऊपर जाने का मार्ग अंजना या आज्ञा चक्र से ऊपर जहां रूह का मकरज (केन्द्र) है इस जिस्म में। आपने मरते हुए आदमी देखे हैं कि नहीं, नीचे चक्र टूटते हैं, कंठ बजता है, आँखे फिर जाती है। तुम जिंदा हो। जिस्म मर गया।

तो उन्होंने (योगियों ने) प्राणों को भी समेटा है और सुरत को भी समेटा है। उसके लिये, प्राणों को समेटने के लिये, फिर नेती, धोती, वगैरा के साधन करने पड़ते हैं, क्योंकि प्राणों को रोकना है ना, कुंभक करना है, तब आगे उस मार्ग को पकड़ सकते हैं, ज्योति मार्ग और श्रुति मार्ग को। तो उसके लिये जब तक शरीर हष्ट पुष्ट न हो, हठ योग की क्रियायें करनी पड़ी। लम्बा साधन है। फी जमाना (आजकल) हम Hereditary तौर पर उसके काबिल नहीं रहे, Time consuming है, लम्बा साधन है। तो सन्तों ने देखा आयु कम है। हम आगे ही जिस्मानी तौर पर कमजोर हैं। उन्होंने प्राणों के संयम को इस ख्याल से Eliminate किया। वह कहते हैं, खाते पीते, सोते जागते, पढ़ते पढ़ाते, बिचारते, प्राण अपना कार्य कर रहे हैं। हमें पता नहीं। तो अगर हम दुनियां के सारे काम बगैर प्राणों के ख्याल के कर रहे हैं, तो परमात्मा का काम क्यों नहीं कर सकते ? उन्होंने इसलिये प्राणों को छोड़ दिया।

परमात्मा का अनुभव करना है आत्मा से, न प्राणों से वह जाना जाता है, न इन्द्रियों से, न मन से, न बुद्धि से। तो उन्होंने (सन्तों ने) सिर्फ सुरत की धार को इकट्ठा किया, प्राणों को छोड़ दिया। इसका नतीजा क्या है ? बच्चा बैठता है, वह भी लाईट देखता है। हर कोई कर सकता है। तो कहते हैं, उन्होंने सुरत का मार्ग लखवाया, ''सुरत का मार्ग लखवावे''। अनुभवी पुरुष भी जमाना Times को देखकर, कौन सा साधन इनको फल सकता है, वह सुरत का मार्ग है, सहज Natural way back to God. जो हर कोई कर सकता है, कहते हैं इसकी वह तालीम देते हैं। सुरत का मार्ग क्या है ? कि तुम आत्मा हो, सुरत की धारों को एकत्र करके पहिले हम जिस्म का रूप बने बैठे हैं, इससे Analyse (अलेहदा) करके तुम्हारी सुरत को ऊपर लाया जाता है, Practically आप देखें जिस्म भूल जाता है, सो जाता है, तुम ऊपर आ गये, Inner eye खुलती है, Light के देखने वाले हो जाते हो, श्रुति के सुनने वाले हो जाते हो। तो बच्चा भी कर सकता है। सुरत को एकत्र करना आसान है। प्राणों को एकत्र करने के लिए बड़ा लम्बा साधन करना पड़ता है जिसके लिये हम फी ज़माना नहीं रहे, साधन जरूर है, मगर क्योंकि हम काबिल नहीं रहे, हर कोई इनसे फायदा नहीं उठा सकता। इसलिए सन्तों ने सुरत का मार्ग रायज किया (चलाया)। गुरु अर्जुन साहब फ़र्माते हैं -

सन्तन की रेनाई परिया, जीव प्राण सब आगे धरिया।

कि हम सन्तों की शरण में गये, सब कुछ उनके अर्पण किया। क्या प्रार्थना करते हैं ?

सेवा सुरत न जाणां काई, दया करो किर्मायणां ।

हम इन्द्रियों के घाट के कीड़े हैं, ऐ महात्माओं ! हमको सुरत की सेवा करनी सिखलाओ। तो सन्त कौन सा योग सिखाते हैं ? योग के माने, युज से निकलता है, आत्मा का प्रभु से मिलाप, चित्त वृत्ति निरोधाः, इच्छा जब खत्म होगी, चित्त वृत्तियों का निरोध, वहां से यह योग शुरू होता है। तो पहिले दिन ही, वह कहते हैं, भई सुरत को ऊपर समेटो। जिस्म, जड़ से, चेतन अलेहदा करो। करके, अन्तर की आँख खोलते हैं, अन्तर के कान खोलते हैं। उस ज्योति के देखने वाला होता है, उस श्रुति के सुनने वाला होता है । वह Way back to God है वह रास्ता है कहां पहुंचाती है ? जहां से वह आ रही है। वह परमात्मा तो Absolute है ना, अशब्द है। वह तो न किसी ने देखा न सुना। वह तो लय होने का मुकाम है। जो ताकत Into expression आई, वह शब्द हुई, नाम हुई, उसमें यह दोनों सूरतें हैं ज्योति मार्ग भी और श्रुति मार्ग भी। कुम्भक करके जाओ तो भी वह रस्ता वही है। तो वह सहज है, वह मुश्किल है। इसको सन्तों ने, कहते हैं चलाया, सुरत शब्द मार्ग को। वह परिपूर्ण परमात्मा Expression में धारा जो आ रही है प्रभु को सब खण्डों ब्रह्मण्डों को बनाकर आधार दे रही

है, वह ज्योति स्वरूप है, और प्रणव की ध्वनि भी है उससे जोड़ देते हैं। That is the way back to God, वह आपको अशब्द में पहुंचाने का जरिया है। कहते हैं, यह मार्ग सन्त बतलाते हैं ।

सुरत चली अब खेलन होली, कर सिंगार बैठे धुन डोली

अब सुरत को ऊपर ले आये, जड़ से चेतन को कहते हैं, Analyse किया, Practical subject (करनी का विषय) है, How to rise above body consciousness ? आप जिस्म-जिस्मानियत से कैसे ऊपर आ सकते हैं ? यह Practically वह बिठा कर अनुभव देते हैं ।

खैंचे सुरत गुरु बलवान

थोड़ा सा तजरूबा देते हैं। दिनों दिन उसको बढ़ाना है। साथ मदद मिलती है। कहते हैं, सुरत ऊपर आ गई। ला देते हैं। सुरत मार्ग का, बिठाकर थोड़ा तजरूबा दे देते हैं। उसको प्रणव की ध्वनि के साथ जोड़ देते हैं। उस डोली में बिठा देते हैं। वह कहाँ पहुंचाती है ? जहां से वह आ रही है। हाफिज साहब ने एक इशारा दिया है -

कस नदानेस्त कि मन्जिल गहे माशूक कुजास्त ।
हमीनस्त कि अजां वांगे जरस मी आयद ।

कोई नहीं जानता कि मेरे प्यारे की मन्जिल कहाँ है ? इतना है कि वहां से ध्वनि आ रही है घन्टे की। अरे भई सब धर्म स्थानों में घन्टे का चिन्ह है कि नहीं ? यह शरीर हरि मन्दिर है, जिसमें ज्योति भी है और प्रणव की ध्वनि भी हो रही है। इसका नमूना बाहर माडल बनाया था समझाने बुझाने के लिये। जब तक आमिल (अनुभवी) लोग रहे, अन्तरमुख होकर इसको पाते रहे, बाहर जो नमूने बनाये थे, वह दिल से उतरते रहे। अब आमिल लोगों की कमी हुई, बाहरमुखी ही लोग रह गये।

नकली मन्दिर मस्जिदों में जाये, अफसोस है।

तुलसी साहब फरमाते हैं, अपने हाथों से बनाये हुये मन्दिरों में जाते हैं जीव, इस सच्चे हरि मन्दिर को छोड़कर ।

कुदरती मसजिद का साकिन, दुख उठाने के लिये ।

अरे भई हकीकत अभी दूर है। यह नमूना था। एक मकान बनाना है। उसको बनाने के लिए यह उसका माडल (नमूना) बनाया । जब मकान बन जाता है तो माडल दिल से उतर जाता है। लड़की है। उसकी शादी हो गई। पहिले छोटी उम्र में वह गुड्डी गुड्डे बना कर ब्याह शादी की

रस्में सीखती है। जब उसकी अपनी शादी हो जाती है, गुड्डी गुड्डे कहां रह जाते हैं ? यह बाहर नमूने थे। समझाने बुझाने के लिए कि हकीकत यह है कि यही हरि मन्दिर है जो तुम लिये फिर रहे हो। इसमें प्रणव की ध्वनि भी हो रही है और ज्योति भी है। दो ही मार्ग है अन्तर। कई लोग सिर्फ ज्योति मार्ग को पकड़ते हैं। ज्योति मार्ग में जाने वाले लोग बाज वक्त ज्योति में घिर जाते हैं। निकलने को कोई रास्ता नहीं रहता। वहां श्रुति मार्ग काम आता है। दोनों साथ साथ चलते हैं। कहां पहुंचाते हैं ? जहां से उनका Outcome (निकास) है, अशब्द में। तो कहते हैं, उसकी डोली में बैठ गई। कहां पहुंचेगी। बिजली की लिफ्ट पर सवार हो गये, कहां पहुंचोगे ? जहां कि वह जा रही है, जहाँ से आ रही है।

(17) बिरह अनुराग रंग घट लीन्हा,
मन को संग ले तन तज दीन्हा ।

उसके रस को पाकर और रस ज्यादा पाने की ख्वाहिश बिरह, सोज जागती है। बाहर से चित्त हटता है। याद रखो, जिस हृदय में बिरह सोज नहीं आई, अभी 'हनोज दिल्ली दूर अस्त।' जिस दरख्त में शगूफे पड़ गये, समझो वहां फल पड़ने की उम्मीद है। समझे। जहां अरे भई, जिस हृदय में बिरह, तड़प, सोज और गुदाज उस प्रभु को पाने के लिए बनी, समझो प्रभु के आने का पेशखेमा (चिन्ह) है। जो दुनिया के लिये तड़प रहे हैं उनको क्या मिलेगा ? दुनिया ? जो प्रभु के लिए तड़प रहे हैं, उनको प्रभु मिलेगा।

जिन पाया तिन रोये,
हंसी खुशी जो पिया मिले,
तो कौन दुहागिन होये ।

तो अन्तर में सोज, गुदाज, बिरह का आना, यह पेशखेमा है। कहते हैं उस रूप में तड़प बनती है। वह कौन सा वक्त है, जब मैं प्रभु की गोद में जाऊं। तड़प बनती है। उसकी तरफ जाने का एक पेशखेमा है। राबिया बसरी एक मुसलमान फकीर हुई है। उससे पूछा गया कि राबिया तू यह बतला कि तू जब नमाज पढ़ती है, प्रभु पहिले आता है, नमाज पढ़ने से, कि नमाज पढ़ने के बाद में ? तो कहने लगी कि प्रभु पहिले आता है, मैं नमाज पीछे पढ़ती हूं। कहते हैं तुमको कैसे पता लगता है कि प्रभु आ गया है ? कहने लगी, जब मेरे अन्तर बड़ी सोज, गुदाज, बिरह जागती है, आँसू बेअख्त्यार, चलते हैं, मैं समझती हूं वह धक्का देने वाला आ गया, मैं नमाज पढ़ने लग जाती हूं। यह पेशखेमा है ।

बिरह बिरह आखिये,
बिरह तू सुलतान ।

जित तन बिरह न उपजे सो तन जान मसान

दुनिया के लिये तो हम सिर पटकते नजर आये। अरे भई कितने लोग हैं, जो प्रभु की याद में आंसू बहाते नजर आये हैं ? तो कहते हैं बिरह सोज जागती है, जब थोड़ी लगन अन्तर मिलती है ना, और बिरह जागती है, वाह भई क्या आनन्द है ! बाहर से चित्त वृत्ति हट जाती है।

जब ओह रस आवा यह रस नहीं भावा ॥

All glory and beauty lies within you तुम्हारे अन्तर में है। सिर्फ हम उस राज (भेद) से बेखबर है। बाहर दुनिया में भटक रहे हैं। अरे भई, यह भी Values of life हैं, जिसम को पालो। समाज से ताल्लुक है। क्योंकि इंसान Social being मिल-जुलकर के रहने वाली हस्ती है, Politically और Universally (राजनैतिक और सार्वभौमिक दृष्टि से) सबसे ऊँचा आदर्श Grand ideal तो यह है ना कि सारी मानव जाति ही एक समाज है। यहां East, west, north, south का कोई सवाल नहीं।

मैं पश्चिम में गया। वहां उन्होंने एक मीटिंग का, जलसे का इन्तजाम किया, East and west, जिसमें East (पूर्व) से मुझे चुना गया। West से वहां एक सज्जन फ्रांस से आने वाले थे। जब मीटिंग हुई, सब इकट्ठे हुये तो वह सज्जन नहीं पहुंचे तो वह कहने लगे, East and west now lie with you (अर्थात पूर्व और पश्चिम दोनों की ओर से आप ही बोलो)। मैंने कहा, There is no east and west. आगे तो यह था ना कि (East for east, west for west) पूर्व, पूर्व के लिए है, पश्चिम पश्चिम के लिये और वह दोनों कभी मिलेंगे नहीं आपस में। मैंने कहा That is man made कि यह भेद-भाव हमने बनाया है, परमात्मा ने न East बनाया न West सारी दुनिया ही उसी का घर है। जितने मुल्क हैं, यह उस मालिक के घर के कमरे हैं। हवाई जहाज से Distance (फासला) तो खत्म हो गया। आज उड़ो तो कल अमेरिका पहुंच जाओ। तो सारे हम उसी कुनबे (कुटुम्ब) के मेम्बर हैं, सब घर उसी के हैं। हम एक ही के पुजारी हैं। There is no east, no west, no north, no south वहां यह Talk दी गई। तो मेरे अर्ज करने का मतलब यह है कि सन्तों के, अनुभवी पुरुषों के पास बैठने से इस बात की समझ आती है कि बात क्या है। आखिर किसी समाज में पैदा होना है। इन्सान Social being है। किसी न किसी समाज में रहना है। रहो। मुबारिक है। किसी

समाज में रहना बरकत है। न रहोगे तो Corruption हो जाएगी। मगर उसकी गर्ज को पाओ। उस समाज की जकड़ों में मत फंस जाओ। समाजें तुमको आजाद करने के लिये बनाए गई, कैद करने के लिये नहीं। जो Strongholds किले, बन जाते हैं अनुभवी पुरुषों की कमी के सबब से, वह हमारे (Man made) हैं। अनुभवी पुरुषों का न यह नजरिया (दृष्टिकोण) रहा, न है, न रहेगा। वह कहते हैं सब उसी के बच्चे हैं।

सतगुरु ऐसा जानिए जो सबसे लये मिलाई जियो

जो सबको मिला कर बैठता है। यह उसका पहिला काम है। वह जगत गुरु है भई, सामाजिक गुरु नहीं। सामाजिक गुरु भी, जो आदर्श उनके सामने है, अगर उसका भी Right प्रचार किया जाये, तो भाई भाई का प्यार बन जाये। गलत प्रचार के सबब से, मुझे अफसोस से कहना पड़ता है कि Paid प्रचार ने हर एक समाज में अधोगति फैलाई है। अनुभवी पुरुषों का काम था प्रचार करना, सन्यासी पुरुषों का, जो गृहस्त आश्रम में आकर, शास्त्र मर्यादा के मुताबिक जीवन बसर करके, फिर वानप्रस्थ में जाकर अनुभव को पाकर, सन्यास में जाते हैं। उनका काम था प्रचार करना। उनकी आँख खुल गई तो सबके अन्तर उसको ही देखता है। फिर प्यार है कि नहीं ? बात कुछ और थी, बन कुछ और गई है। तो यह उनका नजरिया पेश कर रहे हैं -

सबद गुरु से पहिले खेली,
गगन चौक चढ़ त्रिकुटी ले ली।

याने शब्द में दो इजहार हैं, एक Sound एक Light ज्योति मार्ग और श्रुति मार्ग। कहां पर मिलता है ? यहाँ (माथे का इशारा करके) गगन पर मिलता है ! इन्द्रियों के घाट से ऊपर, यहां चढ़ कर, अन्जना या आज्ञा चक्र के ऊपर। यह Self-analysis (जड़ चेतन को अलेहदा करने) का मजमून है। तो कहते हैं, उसके साथ यह होली खेलती है पहिले। उसमें Light भी है, उसमें Beauty भी है, उसमें नशा भी है, प्रणव की ध्वनि में। बाहरी रागों में इतना नशा है, तो इलाही राग में कितना नशा होगा ! बाहर अगर बीन की ध्वनि बजाओ, सांप जैसा जहरीला जानवर सिर रख देता है। अरे भई वह जो इलाही राग, नाद, कलामे कदीम हो रहा है, उसमें कितना नशा होगा ! कि पहिले उसकी (सुरत की) शब्द संग होली चलती है। वह इसको फिर ऊपर ले चलती है, जहां से वह आ रही है, इस वक्त हम पिण्ड में है ना ! पिण्ड से पहिले ऊपर आ कर यह पकड़ी जाती है। फिर वह उसको दर्जे-बदर्जे Stages by stages ले जाती चली जाती है। Ultimately(अन्त में) वहां पहुंचाती है, जहां से वह आ रही है। अशब्द में !

त्रिकुटी माहिं बहुत दिन खेली,
ओंकार संग कीन्हा मेली।

सो अब थोड़ा सा मोटा सा बयान करके आगे चलेंगे। यहां तक तो सब महापुरुषों ने बयान किया, यहां से आगे उनकी (सन्तों की) क,ख, शुरू होती है, जहां दुनिया के फिलसफे खत्म होते हैं। योगीजन भी अंजना चक्र आ कर वहां अनहद सबद या प्रणव की ध्वनि को पकड़ कर सहस्रार में जाता है। यह पहिला कदम है भई सन्तों की तालीम का। योगीश्वर गति वाले ब्रह्म पद तक जाते हैं, पारब्रह्म में लय होते हैं। सन्त आगे कहते हैं आगे भी कुछ है। कई भाई कहते हैं, कुछ भी नहीं है। मुझे कई भाई मिले एक बार, लाहौर में मिले। सत्संग हो रहा था। कहने लगे, भई ब्रह्म से आगे कहते हैं, आगे भी कुछ नहीं हैं। मैंने कहा, बहुत अच्छा भई न सही। संत कहते हैं, कुछ है। अरे भई ब्रह्म तक तो हम भाई हैं कि नहीं ? गले लग कर, बाजू में बाजू डाल कर चलो। समझे ! ब्रह्म से आगे देख लेना। अगर कुछ हुआ तो चल पड़ना। नहीं तो आदर्श तो आप का पूरा हो गया कि नहीं ? कई कहते हैं, बम्बई से पार कुछ नहीं। चलो भई बम्बई तक तो हम साथी हैं कि नहीं ? पिण्ड, अण्ड, ब्रह्मण्ड तक तो चलो। ब्रह्मण्ड से पार कुछ हुआ, लफ्ज तो आता है, पार ब्रह्मण्ड का भी आता है, कुटुस्थ ब्रह्म का भी आता है। है कुछ। वह क्या है ? लाबयान (वर्णन से परे) है, यह अलहेदा बात रही Parallel thoughts (समान विचार) सारे ही मिलते हैं। अरे भई वहां तक तो हम साथी हैं कि नहीं ? चलो, पिण्ड से ऊपर चलो। फिर अपने आप नशा आता चला जायेगा। चार शराबी गले लगकर बैठ सकते हैं। अरे भई उस नशे को पाने वाले गले लगकर क्यों नहीं बैठ सकते ? तो कहते हैं अब, पिण्ड से ऊपर चलो, गगन से ऊपर, शब्द के साथ पहिले हमारी आत्मा होली खेलती है। कैसे कैसे ? उसका आपको थोड़ा सा ज़िक्र होगा सरसरी। पिण्ड से ऊपर आये, अण्ड में पहुंचे, सहस्रार में, या सहसदल कमल कहो। वहाँ से त्रिकुटी देश आये, अगला कदम बताया, जहां से यह त्रिलोकी शुरु होती। वहां की क्या ध्वनि है ? ओम की ध्वनि है, या ओंकार की। मस्ती देने वाली है। वह प्रणव की ध्वनि है। अगर उसको लफ्जों में अदा करो तो लफ्ज ओम बनता है। इसलिये कहा है, ओम प्रणव की ध्वनि है। कहते हैं, वहां पर सुरत पहुंचती है, अण्ड के पार, त्रिकुटी देश। समझे ! यहां पर आप देखिये वह ज्योति भी बढ़ती है, ध्वनि भी बढ़ती है। दोनों ही मार्ग है। गायत्री मंत्र में जो ज़िक्र आया है, भृगो का ज़िक्र आया है, कि अन्तर सूरज है, हे परमात्मा ! हमारी बुद्धि को उधर प्रेरो, तो वह यहां की लाईट का ज़िक्र है। समझे ! कि तुम्हारे अन्तर सूरज है। सब महापुरुषों ने इसका ज़िक्र किया है। गुरु नानक साहब फर्माते है कि आधी रात को सूरज चढ़ता है। मौलाना रूम साहब के पास आलिम लोग आये बहस करने को, तो कहा भई तुम आधी रात को सूरज देखते हो तब तो मेरे से बात करो, नहीं तो मेरा वक्त

जाया (नष्ट) न करो। तो अन्तर की दूसरी स्टेज का ज़िक्र है। पहिले का तो सहस्रार सबने बयान किया है। दूसरी त्रिकुटी देश है। वहां पर सुरत पहुंचती है, जहां से यह त्रिलोकी शुरू होती है। आगे और चलते हैं -

लाल गुलाल रूप सुरत पाया,
तब सतगुरु सुन्न सबद सुनाया ।

वहाँ ज्योति का ज़िक्र आया कि Rising sunlight, लाल सूरज की तरह बड़ा भारी प्रकाश है। इसका सब सन्त महात्माओं ने ज़िक्र किया है। कबीर साहब कहते हैं, ''उगया सूर'' सूरज चढ़ आता है। यह बाहर का नहीं भई, अन्तर का। उस लाईट की ज्योति बढ़ती है। जैसे जैसे गिलाफ (पर्दे) उतरते हैं ना, वैसे वैसे लाईट बढ़ती है। उसके इशारे देते चले जाते हैं। है Practical मजमून। जिसने कभी आँख बन्द करके उसकी ज्योति को देखा नहीं, वह कैसे यकीन करता है ! महापुरुष बिठाते हैं, ज्योति का थोड़ा तजरूबा कराते हैं, दिनों दिन Develop करके आप वह ज्योति बढ़ती चली जाती है, ध्वनि भी बदलती जाती है। पहिले अनहद शब्द, फिर सार शब्द सुन्न के मण्डल का शब्द सुनाते हैं। उससे चलकर आगे सत शब्द-शब्द वही है। उसके Different stages है, दर्जे-बदर्जे चलते हैं। अन्तर दो ही मार्ग हैं, या श्रुति मार्ग या ज्योति मार्ग। मगर उसकी ए. बी. सी. कहां से शुरू होती है ? जब आप पिण्ड से ऊपर आओ। पहिला मरहला हमारे सामने जिस्म से ऊपर आना है। Learn to die so that you may begin to live मरने से पहिले मरना सीखो।

बमीर ऐ दोस्त पेश अज भर्ग अगर में जिन्दगी खाही ।

ऐ दोस्त अगर तू हमेशा की जिन्दगी चाहता है, तो मरना सीख, जिस्म से जीते जी ऊपर आना सीख। वह क्या है ? इन्द्रियों के घाट पर अब फैलाव में जा रही है हमारी सुरत, इसको अन्तर्मुख करना है।

सतगुरु मिले ताँ उलटी भई भाई ।

इन्द्रियों को उलटने का मार्ग देते हैं, इसलिये सन्तों के मार्ग को उलटा मार्ग भी कहा है।

जीवत मरे ताँ बूझ पाई ।

पिण्ड से रूह ऊपर आ गई। जैसे मरते समय रूह पिण्ड को छोड़कर ऊपर आती है, ऐसे ही जीतेजी महापुरुष बिठाकर सुरत को Invert (अन्तर्मुख) करने का मार्ग देते हैं। यह तजरूबा करता है। सेन्ट प्लूटारक कहता है, जैसे रूह अन्त समय पिंड को छोड़ने में तजरूबा करती है, ऐसे ही वह लोग जो Mystery of the beyond में Initiate (अर्थात्

अन्तर्मुख मार्ग मिलता है जिन्हें) वह तजरूबा करते हैं। पिण्ड को वह छोड़ते हैं रोज रोज।

गुरुमुख आवे जाये निसंक ।

कबीर साहब ने फर्माया है -

मरिये तो मर जाइये फूट पड़े संसार ।
ऐसी मरनी जो मरे दिन में सौ सौ बार ।।

(How to rise above body consciousness ?) पिण्ड से कैसे ऊपर आ सकते हैं ? ''गुरुमुख आवे जावे निसंक'' कोई नई बात नहीं। पुरातन से पुरातन साईन्स है। हम भूल चुके हैं ।

सुरत सैल असमान की लख पावे कोई संत ।
तुलसी जग जाने नहीं अति उतंग पिया पंथ ।।

सुरत हमारी असमानों का सफर कर सकती है, (At will transcend) करके ऊपर के मण्डलों में जा सकती है। किनकी ? कहते हैं, सन्तों की, या जो जाते हैं उनके साथ हम भी सीख सकते हैं। बात यह है। सावित्री का जीवन हमारे सामने है। इतिहास में आया है। थोड़ा तो हम विचार से पढ़ते हैं, बाकी पर ज्यादा तवज्जो नहीं है। वहां दिया है कि उसके पति को एक ज्योतिषी ने बतलाया कि फलाने दिन दरख्त से गिर कर मर जायेगा। वह दिन आया, वह साथ हो ली। जंगल में आ गई। जब वह वक्त आया, उसका पति दरख्त से गिरा, बहुत सख्त चोट आई। उसके सिर को अपनी गोद में रखा। तो लिखा है, कि यमराज आये, उसकी रूह को लेकर चल पड़े। फिर और भी कुछ लिखा है कि सावित्री भी जिस्म को छोड़कर चल पड़ी। लम्बे चौड़े किस्से के बाद आता है कि वह वापिस आई। कुछ साईन्स थी जो बड़ी (Practical) है। मगर बड़े थोड़े लोग हैं, जो उससे वाकिफ हैं। मैं ऋषिकेश रहा। हरेक महात्मा से मैं वहां मिला (Intellectual wrestler) बड़े थे। एक आदमी मुझे मिला जो पिण्ड को छोड़कर सहस्रार में जाता था पतंजली योग करके। तो अनुभवी पुरुष जाते हैं कमयाब हैं। आगे भी कमयाब थे, अब भी कमयाब हैं। जिन्होंने उसका तजरूबा नहीं किया वह कहते हैं बस यही है सब कुछ।

एह जग मिठा अगे किन डिठा।

तो अनुभवी पुरुषों की तालीम, आप देखेंगे, कहां से शुरू होती है ? इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर। वह होली खिलाना चाहते हैं, जिसके खेलने से अरे भाई एक बार मनुष्य जीवन पाकर आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ गये, उस रस को पा गये, फिर आना जाना खत्म हो जायेगा कि नहीं ?

जब ओह रस आवा एह रस नहीं भावा

अगर मनुष्य जीवन मिला, इसमें भी आप इन्द्रियों के घाट ही पर रहे, नेक या बद रहे, आना जाना बना रहेगा। ''स्वर्ग नर्क फिर औतार'' सोने की बेड़ी और लोहे की बेड़ी, जीव को बाँधने के लिये एक जैसी है, ऐसे ही नेक कर्म और बद कर्म हैं। यह मिसाल दी हैं भगवान कृष्णजी ने। तो आना-जाना बना रहता है। यह ऐसी होली खेलने का ज़िक्र कर रहे हैं, जिसके खेलने से आना-जाना खत्म हो जाता है। कमीशन लेकर आये तो आये, कैदियों में कैदी नहीं बनकर आयेगा। कैदी सजा-जजा भुगतने आते हैं। वह कैदियों को छुड़ाने आता है। बस। बात तो यह है।

आगे बढ़ी चढ़ी ऊंचे को, उलट न देखे अब नीचे को

सुरत को अगला रस मिलता है, नीचे को क्यों देखेगी ? मैंने ज़िक्र किया था तुलसी साहब ने फ़र्माया कि जब मैं ब्रह्मांड में था, मैंने कहा, वाह ! वाह ! क्या अच्छी दुनिया है। कहते हैं, जब मैं पार ब्रह्मण्ड में गया तो यही मालूम हुआ कि ब्रह्मण्ड एक मेहतरों की टट्टी है। सुरत ऊपर ले रस को पाती है, नीचे की तरफ फिर उसकी रुचि बनती नहीं। ऊंचे रस को पाकर नीचे रस फीके पड़ जाते हैं ।

चल चल पहुंची सतलोक में, फगुवा मांगे सत नाम से

कहते हैं, पिण्ड, अण्ड, ब्रह्मण्ड, पार ब्रह्मण्ड के पार, सतलोक, सच खण्ड में, उस मुकाम में पहुंची जहां आना जाना नहीं, जो न प्रलय में गिरता है, न महाप्रलय में गिरता है। वहाँ सतपुरुष, सतनाम की गोद में जाती है। आखिरी आखिरी मिलाप, वहां पहुंच जाती है। आखिर सतपुरुष सतनाम उसको लय करने का रास्ता दे देता है, लय हो जाता है। यहां तक तो (Expression) का, रमी हुई सत्ता का इजहार है। परमात्मा ज्योतिस्वरूप है। पूरण पुरुष, सतपुरुष, सतनाम, ऐसा पुरुष, जो हमेशा सत्य है। वहां पहुंच जाती है रूह, शब्द ध्वनि के आसरे, शब्द मार्ग के आसरे, श्रुति मार्ग के आसरे कहो। यह रास्ता है सब जीवों के लिये। यह एक ऐसी होली है, इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर जिसका खेलना शुरु होता है और उसके खेलने से हमेशा जीव का आना-जाना खत्म हो जाता है।

गई जहां से फिर वहीं आई, पद में अपने आन समाई ।

यह वह मुकामे हक था, निज घर था, True home of our father था, जहां से हमारी सुरत कभी आई थी। फिर वापस पहुंच गई, आना-जाना खत्म हो गया।

रंग रंग नित खेलन होली, जो होना था सो अब होली ।

कहते हैं इस होली के खेलने से जहां से आये थे जैसे थे वैसे हो गये। हमेशा के लिये आना-जाना खत्म हो गया। अपनी Lost Godhood को पा गये। Dethroned (तख्त से बेतख्त) हो चुके थे। अपने तख्त पर फिर जा कर बैठ गये। तरीका बयान ही है। सुरत उस परमात्मा का अंश है।

कहो कबीर एह राम की अंश ।

यह भी चेतन स्वरूप, वह महाचेतन प्रभु। उसकी गोद में जाकर हमेशा के आनन्द को पा गई, आना-जाना खत्म हो गया।

छोड़ा पिंडा फोड़ा अंडा, खंड-खंड कीना ब्रह्मण्डा ।

बस इस सफर का अब Review देते हैं कि पिंड से पहिले ऊपर आये। फिर अंड से ऊपर आये, फिर ब्रह्माण्ड से ऊपर आ गये। पार ब्रह्मांड के पार सतलोक सच खंड Eternal home of our father में रूह पहुंच गई।

निज घर अपने जाकर बसी, सत सबद धुन बीना रसी।

कहते हैं वहाँ प्रणव की ध्वनि बड़ी मस्ती देने वाली है, वीणा की मिसाल दी है बाहर बीन बजाओ, कितनी मस्ती देने वाली है ? सांप जैसा जहरीला जानवर जब उस ध्वनि को सुनता है, मस्त हो जाता है। जहर को भूल जाता है। कहते हैं, वह बड़ी गम्भीर, बड़ी मस्ती देने वाली प्रणव की ध्वनि है। आखिर वह लय हो जाती है । अशब्द में जाकर ।

हंस रूप अब धारा असली, देह रूप घर बहुतक फंसली ।

कि उस वक्त यह हंस गति को पाता है। उसकी आत्मा विवेकपूर्ण है, दुनिया में आये भी तो उसमें विवेक से खाली नहीं। वह सत और असत का निर्णय करके देखता है। बन्धन में नहीं। फिर मायाकाल उसकी आंखों पर स्याही का पर्दा नहीं फैला सकते। कहते हैं देह रूप तो हमेशा रहे। फंसते रहे। मगर इस हंस गति को पाकर फिर दुनिया में भी अगर आ जाये, ऐसी आत्मायें, तो वह दुनिया में रहती हुई भी दुनिया की नहीं रहती। आप निकली है, दूसरों को निकालने के लिए आ जाती हैं यह कह दो ।

काल निरंजन तोड़ी पसली, हो गई सत नाम गल हंसली ।

याने फैलाव की जो दुनिया में जाने वाली ताकत, ले जाने वाली ताकत है, उससे आजाद हो गये। सतनाम के गले का हार बन गये। प्राप्ति हो गई, रूह बिछड़ी हुई जन्मों-जन्मों की,

उसे पूर्ण पुरुष कहो, सतपुरुष की गोद में समा गई।

जब आवे सुरत देह में रूह को ठान ।
जब चढ़ उलटे सुन्न को हंस रूप पहिचान ॥

कहते हैं, जब तक यह देह रूप है, इन्द्रियों के घाट पर जिस्म का रूप बनी बैठी है। अगर इसे ऊपर आना सीख जाये, Except ye be born anew, ye can not enter the kingdom of God जब तक तुम नई दुनिया में पैदा नहीं होते, क्या जिस्म जिस्मानियत से ऊपर नहीं आते, हकीकत खुलती नहीं, जिस्म के बन्धन में यह बाहरी इन्द्रियों के भोग-रस के जाल में फंसी रहती है। जब ऊपर आकर सुन्न लोक को जाती है तो फिर हंस गति को पा जाती है। पिण्ड,अंड, ब्रह्मंड के पार जा कर इसको हंस गति मिलती है। फिर ऐसी रूह दुनिया में रहती हुई दुनिया से अतीत रहती है। जब वह देह में काम करते हैं, इन्सानों की तरह हैं, अन्तरमुख होते हैं तो हंस बन जाते हैं। अन्तर परमात्मा से जुड़े हैं, बाहर दुनिया से जुड़े हैं। हमजिन्सयत (जाति भाव) कुदरती खासा है। वह जुड़े हैं। आप जुड़े हैं दूसरों को जोड़ते हैं।

सुरत रूह अति अचरजी वर्णन किया न जाय।
देह रूप मिथ्या तजा सतरूप हो जाय।

कि सुरत बड़ी खूबसूरत है। परमात्मा अति खूबसूरत है कि नहीं ? यह भी उसी की अंश है। इसमें भी वैसी ही (Greatness) और खूबसूरती है। (All glory and beauty lies within you.) कहते हैं, जब सत रूप में समाती है तो कुछ और ही रंग है। हकीकत को पा जाती है। यह निर्णय करके बतलाया कि बाहर की होली जो हम खेलते हैं, उसका जिक्र किया। इन्सान कौन सी होली खेल रहा है ? इन्द्रियों के भोगों-रसो की। उससे बन्धन में रहा। अगर पिण्ड से ऊपर आकर अन्तर शब्द मार्ग को पकड़ ले, इसका आना-जाना वह होली खेलकर आखिर प्रभु से मिलाप होता है, आना-जाना खत्म हो जाता है। यह स्वामीजी महाराज का शब्द था। अब मीराबाई का एक छोटा सा शब्द दस-पन्द्रह मिनट के लिये ले लेते हैं। सारे महापुरुष एक ही बात कहते हैं। जिन्होंने अनुभव को पाया है ना, एक ही बात करते हैं, जबानदानी अपनी रही, तरजे बयान (वर्णन शैली) अपना रहा। मीराबाई का यह शब्द है छोटा सा।

फागुन के दिन चार होली खेली मना रे।

कहते हैं, फागुन का महीना है भई, यह हमेशा रहने वाला नहीं। फागुन का महीना हमेशा तो नहीं रहता ना ! क्या मतलब, यह मनुष्य जीवन भी हमेशा नहीं रहता। फागुन का महीना

आया है, होली खेलने का वक्त है, हकीकत के इजहार के पाने का समय है। अरे भाई यह दिन चार का मेला है, इसमें हकीकत को पा ले, यह जिन्दगी हमेशा नहीं रहेगी। मनुष्य जीवन में ही तुम यह खेल, खेल सकते हो।

(2) बिन करताल पखावज बाजे, अनहद की झनकार रे।

फूमति हैं, बाहर बाजे-गाजे बजाते हैं ना, यह तो हाथों का सामान है ना ! कहते हैं, वह तो बगैर करताल बगैर हाथों के, वह अपने आप सुरीले बाजे, बज रहे हैं, राग-रंग हो रहे हैं। कहते हैं वह होली खेलो। यह फागुन असली फागुन है जिसके पाने से तुम्हारे जीवन की कल्याण हो सकती है।

(3) बिन सुर राग छतीसों गावे, रोम-रोम रंग सार रे ।

यहां तो कई सुरें तानें बनानी पड़ती हैं ना, एक राग शुरू करने के लिये। कहते हैं, वह बगैर स्वरों के अपने आप वह राग चल रहा है। वहां बनाने की जरूरत नहीं, अपने आप हो रहा है, कुदरत का बनाया राग। श्रुति का मार्ग है। प्रणव की ध्वनि बड़े नशे देने वाली है, उदोगीत हो रहा है। (Socrates) सुक्रात ने कहा, मुझे एक अन्तर में आवाज सुनाई दी, वह मुझे खेंचकर एक ऐसी दुनिया में ले गई जो एक नई दुनिया थी। (Music of the spheres) करके Plato अफलातून ने बयान किया है। कहते हैं, यह फागुन का महीना है, अगर तुम इसको पा लो, यह होली खेलो तो काम बन जाये।

बिन सुर राग छतीसों गावे, रोम-रोम रंग सार रे।
(4) शील सन्तोष की केसर घोली प्रेम प्रीत पिचकार रे ।

कहते हैं, कि बाहर तो हम पिचकारी से रंग डालते है ना, किस चीज का रंग बनाया ? कहते हैं शील का (Purity, chastity in word, thought and deed) पवित्रता, मन करके, बचन करके और कर्म करके, शील को धारण करो। शील, सन्तोष। सन्तोष के माने सबर, जितनी खाहिशात (इच्छायें) बन गई, वहीं खड़े हो जाओ। खड़े हो, फिर देखो कहां हो। कहते हैं शील और सन्तोष का रंग बनाया तो प्रेम की पिचकारी में रंग चढ़ा लिया। आप भी उस रंग को पाया, दूसरों को भी उसी से रंगा। (Out of the abundance of heart a man speaks) जो अन्तर की गति है, जिसके अन्तर शील है पवित्रता है, याद रखो उसका दामन छूने से भी तुमको पवित्रता आती है। समझे। कई पुराने भाईयों में यह कायदा है ना, फलाने का भई पांव का अंगूठा धोओ, भई उसमें शीलता की एकबरकत है। जो ब्रह्मचर्य की रक्षा करने वाला है, वह बड़ा भारी योगी है। कहते हैं शील और सन्तोष, ख्वाहिशात अब उसको खेंच नहीं सकती। और वह प्रेम की ठाठें मारता समुन्दर है। रंग में आता है, प्यार से

नजरें फैलती हैं, उसकी मण्डल को (Charging) होती है। किस चीज का असर पड़ता है ? शीलता का, ठंडक का, शान्ति का, टिकाव का,

नफ्स हरगिज न कुशद जुज जिल्ले पीर ।

यह नफस (मन) कभी मरता नहीं, जब तक किसी अनुभवी पुरुष का साया न पड़े। कहते हैं यह वह होली खेलता है।

(5) उड़त गुलाल लाल भये बादल बरसत रंग अपार रे।

कि अन्दर बड़ी Beauties हैं। कई रंग बिरंगे अन्तर नज़ारे मिलते हैं। लाईट कहीं लाल, जिसका त्रिकुटी देश में ज़िक्र किया है। सब महापुरुषों ने, ज़िक्र किया है। कहते हैं, ऐसे रंग-बिरंगे नज़ारे, आला सीनरी और नये से नया रंग। बाहर की होली की बजाय अन्तर Natural (कुदरती) राग हो रहे हैं। उसको पाकर दुनिया की तरफ से फिर चित्त वृत्ति हटने लगती है।

जब ओह रस आवा एह रस नहीं भावा ।

उस महारस को पाकर बाहर के सारे रस फीके पड़ जाते हैं ।

(6) घट के पट सब खोल दिये हैं,
लोक लाज सब डार रे।

one line

कहते हैं, अन्तर का रस्ता खुल गया। हकीकत को देख रहा है। अरे भई, लोक लाज क्या करेगी ? एक चीज़ को पा रहा है। स्त्री है। वह पति की तरफ जा रही है। लोग कहते हैं, यह बदमाश है। कभी वह सुनती है ? अरे भई हकीकत के नशे को पाकर लोग कहते हैं, अरे भई इसकी अकल खराब हो गई, कुराहिया हो गया। कभी वह सुनता है ? नहीं ! कहते हैं हमको हकीकत मिली। हकीकत को मिलकर इन्सान नशे में जाता है। दुनिया क्या कहती है। खुसरो साहब थे। मैं आपको एक छोटी सी कहानी सुनाऊं, बीती उनकी। याद रखो परमात्मा सब में है। कोई घट उससे खाली नहीं है। सवाल किया उनसे कि भई, काबा और बुतखाना, यह दोनों ही खुदा के घर हैं ना ! काबा तो खलील उल्लाह हजरत इब्राहीम का बुतखाना था। यह बाहर हमने बुत बना कर रखे, उसकी याद के नमूने बनाये। और बात कुछ नहीं। हकीकत परस्ती की तरफ जाने के लिये माडल बनाये हैं, यह कह दो। तो लोग पूछने लगे कि बताओ कौन सा अच्छा है, काबा या बुतखाना ? कहने लगे -

हरगिज मगो कि काबा जे बुतखाना बेहतर अस्त ।

यह कभी न कहो कि काबा बुतखाने से अच्छा है। कहते हैं कि आपकी नज़र में कौन अच्छा है ? फ़र्माते हैं -

हर जा हस्त जलवायें जानाना बेहतर अस्त ।

जहां उसका जलवा हो रहा है, वह सबसे बेहतर है, अरे भई अनुभवी पुरुष के अन्तर वह जलवा हो रहा है। कहते हैं, वही चलता-फिरता मन्दिर है हरि का। तो क्या फर्माते हैं -

उड़त गुलाल लाल भये बादल बरसत रंग अपार रे।

याने उस हकीकत को हमने देखा नहीं, ताकत को देखा नहीं, पहिलवान की सूरत देखकर ताकत का ख्याल आता है। शौक बनता है। ऐसे अनुभवी पुरुष, जिससे उस हकीकत को पाया है, है हम में भी, हम अभी इन्द्रियों के घाट के गुलाम हैं, जिस्म का रूप बने बैठे हैं, देहधारण किये हुए। वह इससे ऊपर आकर उस नशे को पाते हैं। उनसे किरनें निकलती हैं, उनके मंडल में Charing है। कहते हैं, उसको पाकर नशा आता है। अजीब रंग बाहर बनता है। हजरत बाहू साहब थे। वह कहने लगे मेरे जिस्म की जितनी लूयें है ना, यह सब आंखें बन जायें, एक एक लूं (रोम) के नीचे लाख-लाख आंखें बन जायें और इतनी आंखों से, जहां उसके जलवे का इज़हार हो रहा है उसको देखकर और देखने को जी करता है। यह उन लोगों की कहानी है, जिनकी अन्तर की आँख खुलती है। वह नहीं कहते हम कौन हैं। वह कहते हैं, मैं दास हूं।

जो मोको परमेश्वर उचरै सो सब नरक कुण्ड में परैं ।

वह कहते हैं -

मानुष मूरत नानक नाँव ।

मैं तुम्हारा भाई हूं, मैं तुम्हारा दास हूं। मगर जब हकीकत की आँख खुलती है, उसमें प्रगट है,हम जाते हैं, हमें भी इसमें मदद कर दो। और तो कोई बात नहीं है तो हममें, आगे ही मौजूद है कुछ नई बात उन्होंने देनी नहीं, मगर क्योंकि इन्द्रियों के घाट पर दबे पड़े हैं, इससे ऊपर लाने के लिये उभार चाहिये।

घट के पट सब खोल दिये हैं,
लोक लाज सब डार रे ।

होली खेल पिया घर आये सोई प्यारी पिया प्यार रे।

कहते हैं, बाहर खेलते हो, उस प्रीतम से होली खेलो भई, जैसे जैसे खेलोगे और प्यार बनेगा। दुनिया के प्यार कम हो जायेंगे, Attachment जाती रहेगी। फिर अगर दुनिया से प्यार बनेगा तो वही सब में खेलता नज़र आयेगा। वह प्यार कुछ ऐसा है जो तुमको बन्धन में नहीं लायेगा।

मीरा के प्रभु गिरधरनागर चरण कमल बलिहार रे।

तो अब परमात्मा के मुतल्लिक बयान करते हैं, कि हे प्रभु तुझ पर बार-बार मैं कुर्बान हूं। मनुष्य जीवन भागों से मिला है, चार दिन की चान्दनी है, तेरी होली को खेल रहे हैं, नशे को पा रहे हैं। तो यह सन्तों की, अनुभवी पुरुषों की होली है जिसके खेलने से आना-जाना खत्म हो जाता है, दुनिया इन्द्रियों के भोगों-रसों की होली खेल रही है। इनसे काम ले लो Make the best use of them. और जब तक अन्तर इन्द्रियाँ उलटकर उस हकीकत को नहीं पाते, जीवन निष्फल चला जाता है -

एक अर्ज सुनो पिया मोरी मैं किन संग खेलूं होरी ।
तुम तो जाये विदेसा छाये, हम से रहे चित्त चोरी,
कौन तन आभूषण छोड़े सब ही, तज दिये पाट पटोरी,
सखी री मिलने की लग रही डोरी, किन संग खेलूं होरी ।
कब की ठाड़ी मैं मग जोऊं निस दिन विरहा सतावे,
कहा कहूं कछु कहत न आवे, जियड़ा अति अकुलावे,
सखी री कब पिया दरस दिखावे,
है कोई ऐसा परम सनेही, तुरत सन्देशा लावे,
मौ बिरहन कबहूं की मोको हंसकर निकट बुलावे,
सखी री मीरा संग खेलें होरी ।

तो यह अनुभवी पुरुषों की बातें हैं भई। दुनिया में रहो। जिस्म रखते हो, इसको पा लो। यह हरि का मन्दिर है, बाहर से भी सुथरा रखो, इसको साफ सुथरा रखकर, वह परमात्मा तुम में बस रहा है, उसकी गोद में जाओ। उसके Mouthpiece बनो। यह दुनिया भी सफल अगली दुनिया भी। दोनों हाथ लड्डू रहें। किसी समाज में रहो, सन्तों का नज़रिया यही है। जिस समाज में हो, उसमें रहो। जिस्म पर जिस समाज की मोहर है, उसके हवाले करो। तुम्हारी आत्मा पर प्रभु की मोहर है, उसके हवाले करो। बस, वही समाज मुबारिक जिसमें तुमने रहकर प्रभु को पा लिया। तो सन्तों का नज़रिया हमेशा ही यही रहा है। वह कोई खास समाज नहीं बनाते, कुएँ पर और कुआँ नहीं लगाते। वह कहते हैं, आमे ही कुएँ बड़े हैं, जिस समाज में हो उसमें रहो। हकीकत, जो हमारा आदर्श है, उसको पाना है, उसको पा लो, ऐसे पुरुषों की सोहबत में, जिन्होंने उसको पाया है। ✪